।। नमः शिवाय।।

षष्ठ अध्याय

शिव शक्ति कथा

;रुद्र खण्डद्ध

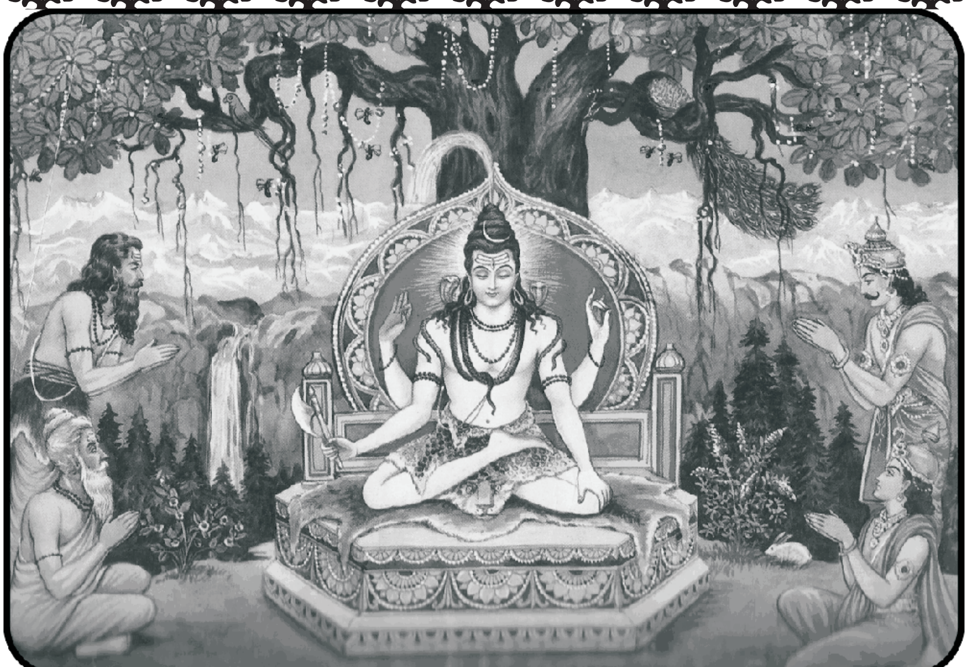

देव,)षि, मुनि, मानव द्वारा
भगवान शिव की स्तुति

ध्यान

वाचामगोचरमनेकगुणस्वरूपं,
वागीशविष्णुसुरसंवितपादपीठम्।
वामेन विग्रह करेण कलत्रवन्तं,
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्।।1।।
भूताधिपं भुजगभूषणभूषितांगं,
व्याघ्राजिनाम्बरधरं जटिलत्रिनेत्रम्।
पाशांकुशाभयवरप्रदशूलपाणिं,
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्।।2।।
शीतांशुशोभितकिरीटविराजमानं,
भालेक्षणानलविशोषितपंचबाणम्।।
नागाधिपंरचितभासुरकर्णपूरं,
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्।।3।।

गुण रूप महिमा अतुलनीय जिसके,
ब्रह्मादि विष्णु सुर देव सेवी।
असमर्थ वाणी बताने में उसको,
विश्वनाथ काशीपति को नमन है।।1।।
भव भूत अधिपति नागन विभूषित,,
बाघाम्बरी तन त्रिशूल संगा।
कर पाश त्रिनेत्र भव व्याधिहारी,
विश्वनाथ काशीपति को नमन है।।2।।
भालस्य पावक करि कामदग्धा,
साधस्य कुण्डल शोभा अनूपम।
आनन्द सद्गुण शशि तेज सोहत,
विश्वनाथ काशीपति को नमन है।।3।।

श्री गणेशाय नमः

नमः शिवाय   नमः शिवायै

शिव शक्ति कथा

षष्ठ अध्याय ;रुद्र खण्डद्ध

ॐ नमः शिवाय

मंगल वन्दना

उग्र नृसिंहाय विद्महे, वज्रणखाय धीमहि
तन्नो नृसिंहः प्रचोदयात्।
महाज्वालाय विद्महे, अग्निदेवाय धीमहि
तन्नो अग्निः प्रचोदयात्।
भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुवरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात्।

तस्मै नमः परम कारणकारणाय,
दीप्तोज्ज्वलित पिंगल लोचनाय।
नागेन्द्रहारकृत कुण्डलभूषणाय,
ब्रह्मेन्द्रविष्णुवरदाय नमः शिवाय।।1।।
श्रीमत्प्रसन्नशशिपन्नगभूषणाय,
शैलेन्द्रजावदनचुम्बित लोचनाय।
कैलासमन्दर महेन्द्र निकेतनाय,
लोकत्रयार्तिहरणाय नमः शिवाय।।2।।
पद्मावदातमणिकुण्डलगोवृषाय,
कृष्णागरुप्रचुरचन्दन चर्चिताय।
भस्मानुषक्तविकचोत्पलमल्लिकाय,
नीलाब्जकण्ठसदृशाय नमः शिवाय।।3।।
लम्बत्सपिंगलजटामुकुटोत्कटाय,
दंष्ट्राकराल विकटोत्कट भैरवाय।
व्याघ्राजिनाम्बरधराय मनोहराय,
त्रैलोक्यनाथनमिताय नमः

दक्षप्रजापति महामख नाशनाय,
क्षिप्रं महात्रिपुरदानवघातनाय।
ब्रह्मोर्जितोर्ध्वग करोटिनिकृन्तनाय,
योगाय योगनमिताय नमः शिवाय।।5।।
संसार सृष्टि घटनापरिवर्तनाय,
रक्षः पिशाचगणसिद्ध समाकुलाय।
सिद्धोरगग्रह गणेन्द्रनिषेविताय,
शार्दूल चर्मवसनाय नमः शिवाय।।6।।
भस्मांगरागकृतरूपमनोहराय,
सौम्यावदात वनमाश्रितमाश्रिताय।
गौरीकटाक्षनयनार्धनिरीक्षणाय,
गोक्षीरधारधवलाय नमः शिवाय।।7।।
आदित्यसोमवरुणानिलसेविताय,
यज्ञाग्निहोत्रवरधूम निकेतनाय।
ऋक्सामवेद मुनिभिः स्तुतिसंयुताय,
गोपाय गोपनमिताय नमः शिवाय।।8।।

वाहनं वृषभो यस्य वासुकिः कण्ठभूषणम्।
वामे शक्ति धरं देवं वाकाराय नमो नमः।।9।।

कलिकल्मष हर काशिपति, तरु कल्याण स्वरूप।
गुण निधि गिरिजापति प्रभु, नाशउ भय भवकूप।।1।।
लवनिमेष जे ध्यान धरि, सहजेउ उतरइ पार।
अस स्वभाव अवतार लेइ, करत लोक उद्धार।।2।।
गृह जीवन श्रद्धा परम, करिय गृही सन्मान।
देश भूमि अनुमान चलि, कीन्ह धरा सुखदान।।3।।

परम पुनीत काशिका धरनी। महिमा अमित जाइ नहि बरनी।।
बसहिं जहां गिरिजापति ईशा। तहं व्यापइ सतयुग सब दीशा।।
जय काशीपति दीनदयाला। धर्म गृही तुम सम के पाला।।
कोऊ रूप रहहिं युग कोऊ। तुम रक्षक मर्यादा वोऊ।।
काशी बासी विश्व प्रबासी। जग अविनाशी भन सुखराशी।।
नाथ उमापति भव महदेवा। दीनदयाल मनुज सुर सेवा।।
करि स्मरण शकति अवतारी। गृह जीवन महिमा बल धारी।।
कुल समेत गिरिजापति स्वामी। फिरत दुरावत वसुधा खामी।।
सुर मुनि शौनक सूत उचारा। वन्दि महेश सहज भव पारा।।
प्रभु प्रताप दुःख आउ न कोऊ। जेहि युग दुःखे दुःखी सब होऊ।।
गिरिजापति महिमा प्रतापा। सबै सुनाइ सूत प्रलापा।।

शिवकुमार स्कन्ध षडानन। करिय तारकासुर जब नाशन।।
सुरन्ह अभय भै मन मुदिताई। पुनि प्रभुता व्यापी सब ठांई।।
तारक सन्तति तीन कुमारा। बाढ़े जब निज भुज बल धारा।।
पिता मरन बदला सुधियाने। मिलइ केसस मन लाग सताने।।
अस्त्र शस्त्र जप तप बल सेना। सहित बली मद जोर घटे ना।।
जेहि विधि सकइ सुरन्ह जय पाई। सो पथ नीति चलै त्रय भाई।।
तीनहु तारक सुत बलवन्ता। नहि दिखाइ जिन भुज बल अन्ता।।
एक से एक बली भुज धारा। तारकाक्ष गा जेठ पुकारा।।
नाम पड़ा दूजे विन्दु माली। जेठ भ्रात सम रह बलशाली।।
तीज तनय कमलाक्ष कहावा। सबै इन्द्रिय जित बल पावा।।
पर तीनों सुर द्रोह मचावत। नाना विधि भय लोक दिखावत।।
यदपि न त्रय सुख भोग विलासी। पर सुर द्रोह करन्ह अभिलासी।।

परम बली तारक तनय, तीनहु कीन विचार।
मिलु पितु बदला भांति जेहि, सोई करु उपचार।।4।।

त्रय खल मन इहि भाव समाये। तनय सो भल पितु बैरि ढहाये।।
बनि सुर बैरी तारक पूतइ। आपस करिय मंत्रणा तुरतइ।।
बिनु जप तप बल वर वरदानेउ। जीतब दुर्लभ देव ठिकानेउ।।
बिनु वर बल नहि सफल प्रयासा। संभव नाहि होन सुर नाशा।।
इहि कारन इहि नीति स्वभाऊ। घर तजि तीनु चलेउ तप ताऊ।।
शैले मेरु कन्दरा मांही। लगे करन तप विधना ध्याहीं।।
जप तप प्रेम परम अनुरागा।। विधना चरन सतत मन लागा।।
जेहि विधि हरखहिं देव विधाता। ताते राखि दिवस निशि नाता।।
हेतु मनोरथ पूरण करनी। करन्ह लगे त्रय खल तप धरनी।।
इहि विधि करत गये दिन ढेरा। त्रय तपसी गै बनि विधि चेरा।।
तप बल नाशत दोष अनेका। भै वर योगे खल प्रत्येका।।
तप विलोकि विधना हरखाने। वर परसन आये तिन थाने।।
यद्यपि जानत खल कुल बालक। पाइअ वर बनिहइ सुर घालक।।
पर तप महिमा जाइ न टारी। प्रगटे विधि वर देन विचारी।।
निज परिचय विधि भाखन लागे। मुदित भावना तपसिन आगे।।
कह वर मांगु जौन मन भाये। देब सोई विधि वचन सुनाये।।
भले असुर कुल पर तप कारन। वर अधिकार मिला संसारन।।
नावत शीश नमत विधि चरना। त्रय खल मोद उभरु अनबरना।।

पानि जोरि त्रय भ्रात मिलि, कीन प्रथम प्रणिपात।
पुनि अन्तर पीड़ा कथिय, जौन चाह तप नात।।5।।

बूझि असुरगण विधि अनुकूले। परमानन्द परम सुख फूले।।
खल तीनहु बोले मृदु बानी। नाथ तुमहिं हम कुल सुर मानी।।
जौ प्रसन्न प्रभु मोपर होहू। तौ वर देहु मांगु हम जोहू।।
जेतिक जीव जगत जग मांही। लेहुं जीति संशय रहु नाही।।
दारिद रोग जरा दुःख कोऊ। व्यापइ नाहि ताप त्रय जोऊ।।
जे रिपु रूप सबल कुल घाती। बल वर देहु तिनहिं हम घाती।।
बनहिं अवध्य शरीर हमारे। मौत न मोरी ओर निहारे।।
मौत घाट हम ताहि उतारी। करहीं जे खल कुल ते रारी।।
आगे चाह बनइ पुनि जैसे। बल वर शकति मिलै मोहि वैसे।।
लोक राज सुख लागइ थोरा। जौ दिन थोर जियन्ह रह मोरा।।
इहि ते नाथ देहु अमराई। पाइ लोक चलि शकति पसाई।।

तपसी दैत्यन मांग सुनि, ब्रह्मा मन अथिरान।
भा असूझ मन ध्याइ शिव, बोले नरम जबान।।6।।

सुनहु असुर गण भगत हमारे। तप विलोकि भा नेह तुम्हारे।।
आपन जानि उभरु अनुरागा। देत वचन देबइ मुंह मांगा।।
कपट दुराइ सुनावत बाता। जगत विधान जाइ नहि घाता।।
भल अनभल कुछ करै कमाई। पाउ न कोऊ गात अमराई।।
सब दै देब तनिक शक नाही। देत अमरता संशय मांही।।
तजि यह मांग मांगहू आना। दुर्लभ जौन गवा जग माना।।
तप बल भले मिलइ अमराई। पर बनहीं इहि गात गंवाई।।
जग विधान हम सांच बतावत। सुर अरि मानि नाहि बहकावत।।
जप तप ध्यान यज्ञ जे करहीं। ते प्रिय मोहि चलहुं अनुसरहीं।।
जेहि विधि जीति सकउ अरि आपन। सो वर देब करउ सो मांगन।।
मांगहु तीनहु तीन प्रकारे। बनि सकु यथा अभय संसारे।।
रह चिर जीवन बड़ सुख संगा। वंचित काल वरण परसंगा।।
अरि वध भय तजि फिरु निःशंका। विजयी विश्व बजाइअ डंका।।

लोक रीति सदनीति मय, सुनि प्रिय विधना बैन।
खलगण पुनि ध्यानस्थ भै, दिन बिताइ दुइ रैन।।7।।
चित चिन्तन मंथन करिय, बहु विधि मने विचारि।
लोक पिता ब्रह्मा मुखे, खलगण बैन उचारि।।8।

दूज न खल हित तुमहि समाना। सकुल हमार तुमहि अस जाना।।
जोरि पानि बोले खल बानी। देव तुम्हारि बात हम मानी।।
पर जौ देखहुं खल इतिहासा। तौ मिलहीं बहु बार विनाशा।।
खल परिवार सबै बलवन्ता। सुख वैभव संग सोह अनन्ता।।

पर घर ग्राम नगर पुर नाहीं। रण बल राखि फिरैं सब ठांही।।
नाहि सुरक्षा बिन घर आंगन। बसइ नगर प्रथम इहि मांगन।।
बैरी मोर कोउ सुर होऊ। नाही भेदि सकै पुर वोऊ।।
विचरउं धरा बिना भय बाधा। चाहउं जौन पाउ अनसाधा।।
तारकाक्ष अस मांग सुनावा। सुबरन नगर मोरे मन भावा।।
रहु सो पुर कवचावृत ऐसे। भेदि न जाइ पराजय जय से।।
पुनि कमलाक्ष सुनाइअ मांगा। तप करि जौन उपजु अनुरागा।।
रजत नगर गृह दीजइ मोहूं। परम विशाल न जग तेस होहूं।।
सुर द्रोही प्रविशइ न तामें। कुल समेत निवसहुं हम जामें।।
इहि विधि मांग करिय दोउ भ्राता। अवसर पाइ तीज करि बाता।।
बड़ सरेख बन विद्युन्माली। कह प्रभु जाइ वचन नहि खाली।।
बनेउ भ्रात दोउ भाग्य विधाता। चाह हमारि बनउ बल त्राता।।
चाह न मोरि सम्पदा वैभव। अरि विजयी चाहत बल गौरव।।
लौह नगर गृह वज्र समाना। करउ मोहि ब्रह्मन् अनुदाना।।
तीन बनावन तीनहु नगरी। परम विशाल मनोहर बखरी।।
एक स्वर्ग दुज रह अन्तरिछा। तीज धरा जहां मोर स्वेच्छा।।
त्रय सम्बन्ध परस्पर रहहीं। भये अकर्म नाहि सुख घटहीं।।
सकै न देखि इनहिं जग दृष्टी। मानव जीव जन्तु कोउ सृष्टी।।
नाही जाइ तीन इकताई। भले बरस दिन सहस बिताई।।

दृष्टि उठाये एक थल, दीखहुं तीनों ठांव।
परम अलौकिक पुर बनै, मिलैं न अस जग गांव।।9।।
एवमस्तु ब्रह्मा कहेउ, पुरउब मांग तुम्हार।
जग वैभव परसब सकल, तुम्हरे चाह नुसार।।10।।

जानत सकल विधाता कारन। पर खल तप रह नहि साधारन।।
तप बल मेटि जाइ जग नाही। करइ कोउ पावइ फल वाही।।
जौ रह विधि वर नगर बसावन। तौ परु आपुहि भार उठावन।।
रह तेहि काल कुशल कारीगर। मय मिस्त्री पूरक भारी वर।।
तेहि बुलाइ विधि देइ आदेशा। विरचन पुर रमणीय विशेषा।।
दूज लोक सम नगर बनावन। अति विचित्र वसुधा मन भावन।।
वर अनुसारे विधि समुझावा। सब सामान देब मुख गावा।।
विरचु प्रथम पुर स्वर्ग समाना। सुबरन भवन कलाकृत नाना।।
करु स्थित नभ मण्डल मांही। रवि शशि ज्योति परै सब ठांही।।
जिनु विलोकु मोहइ मन ताके। सुरन्ह पियारि लगै छबि वाके।।
नगर व्यवस्था बनइ अनूपा। रखि अन्तर प्रजा घर भूपा।।

मानि दूज सृष्टी अनुहारे। अस खल नगर करहु निरमारे।।

सुनि विधि वाणी लाइ मन, कीन्हेउ मय स्वीकार।
हाथ जोरि बोलन लगेउ, आगिल नाथ उचार।।11।।

मय अनुकूल जानि वर बाता। मुदित बैन पुनि भाखु विधाता।।
रजत नगर करु दूज तयारा। पुर शोभा प्रथम अनुहारा।।
अन्तरिक्ष रखु इहि पुर ठांऊ। डारु तिमे खलनायक नांऊ।।
तीसर नगर विरांचउ धरनी। करि तामें सब लोहा करनी।।
अन्तर धातु कमी नहि शोभा। जाहि विलोकि ताहि खल लोभा।।
तीनउ पुर महिमा तेहि ढंगा। सोह लोक त्रय जौन प्रसंगा।।
पर अरि दृष्टि विलोकि न पावइ। जब खल सेन नगर घुसि आवइ।।
रक्षित सुदृढ़ रहइ पुर वैसे। ढंग नवीन विरांचउ जैसे।।
रोग दोष दुःख दारिद तापइ। तीनउ पुर नहि कबौं वियापइ।।
रह जेस करन नगर निर्माना। तेस विधना समुझाइ विधाना।।
सुनिय मानि मय ध्यान लगाइअ। लाइ भाव बड़ नीक बनाइअ।।
कथननुसार विरांचन लागा। आपुन्ह राखि परम अनुरागा।।
नेह लगन जापर जेहि जैसे। विधि आशीष फलइ सो तैसे।।
निशिदिन चलेउ विरांचन काजू। कीन्हेव मय श्रम सहित समाजू।।
लाग न बरस मास छ अवसर। विरचन नगर तीन साजत घर।।
वर नुसार भा पुर निरमाना। जाइ न शोभा तासु बखाना।।
देखत जे मोहत मन वोऊ। निवसन नगर छोह करि सोऊ।।

विधि बोलाइ दिखराइ तेहि, मय स्वीकारी लीन्ह।
पुर उद्घाटन विधि करिय, निवसन आयसु दीन्ह।।12।।

जेहि विधि जांइ असुर अरि हारी। व्यापु शकति सो त्रय पुर ठारी।।
विधि आदेश नमन करि खल गन। कीन्हेव निज निज नगर प्रवेशन।।
मय मन मोहित भा छबि देखी। पुर शोभा वैभव बल शेखी।।
अपुनव बसा नगर तेहि आई। जहां विलोकु मनेउ प्रीताई।।
भोगन्ह लाग राज सुख चाहा। आपु सहित कुल परम उछाहा।।
त्रय पुर शोभा जाइ न वरनी। जहं वर ब्रह्मा रह मय करनी।।
सो शोभा न मिलइ कैलासू। निरखे स्वर्ग सहै उपहासू।।
विधि विधान तंह देवाचारा। खल घर भले सोह सदचारा।।
जो महिमा कहुं नाहि सुहाई। तीनउ पुर सो पग पग छाई।।
जेहि पुर सदाचार व्यवहारा। बसु विदेशि कह सनत्कुमारा।।
तीरथ मानि दरस जग आवइ। तहं जीवन दिन अवसि बितावइ।।
युग परिवर्तन नीति निदेशा। तीनउ पुर बह विमल संदेशा।।

दानव मानव द्विज गो धेनू। बसि तहं रहहिं मुदित दिन रैनू।।
करइ न कोऊ काहू हानी। देव सम्पदा सकल सुहानी।।
धर्म धरोहर जागत जहवां। मनुज मनोहर लागत तहवां।।

तीनउ खल ब्रह्मा भजत, राखत शिव ते नेह।
नृपाशीषत नगर जन, जहं पावत सुख देह।।13।।

नहि गज बाज ताहि पुर गणना। सोहत कल्प वृक्ष हर अंगना।।
तीनउ पुर महिमा प्रभुताई। भंई विदित सुनु लोग लुगाई।।
जेहि पुर शंभु जयति गुंजारे। तहां सकल सुख हाथ पसारे।।
होहीं वेद पाठ हर बखरी। क्रिया यज्ञ विभूषित नगरी।।
शास्त्र परायण तन तप धारी। निज पुर तजि द्विज तहां पधारी।।
तेहि पुर नारि धरम सुख जागा। जेस पुर त्यागि दनुजता भागा।।
उपजहिं सन्तति बड़ बलवाना। बुधि विद्या बल देव समाना।।
सदाचार सुख सकल सुहाने। श्रुति स्मृति परहिं सब काने।।
सबै लोभान ताहि पुर निवसन। गै केतनौ बसि भा पुर विकसन।।
शिक्षा शिक्षित विद्या भूषित। धर्म परायण न कोउ दूषित।।
चारण सिद्ध अप्सरा योगी। बसै तहां गै बनि पुर भोगी।।
सो पुर पूरक मन अभिलासा। जौन आश जे करु प्रयासा।।
प्रेम परस्पर सबु विश्वासी। जपहिं निरन्तर शंकर काशी।।
सकल राज सुख भोग अनेकन। एक नाहि भोगहिं परतेकन।।
शंकर भगति निरत दिन राती रहि बनि गयो बली सुर घाती।।
तीन लोक सुख भोगन लागे। प्रभुता देखि फिरहिं सुर भागे।।
शासन काल तीन खल केरे। इहि विधि करत गये दिन ढेरे।।
पुर महिमा नहि जाइ बखानी। भले तीन पुर रह त्रय खानी।।

वर ब्रह्मा शिव भक्ति बल, पुर रचना प्रभाव।
सकल सम्पदा सोह जहं, काह न मन मद आव।।14।।

जाति स्वभाऊ मद प्रभाऊ। होत गर्व मन आन दबाऊ।।
बिनसत बुधि उपजत कुविचारा। प्रियता बढ़ति कुपथ संसारा।।
होवति पुण्य कमाही हीना। कुमति पाप अघ बनत प्रवीना।।
चिर लवलीन राजसुख करनी। खल बूझे आपुन्ह बड़ धरनी।।
सुर अरिताई खल सुधियाने। पिता मरन लाइअ मन ध्याने।।
उपजिय पीर चुकावन बदला। बनु दूषित अन्तर मन अगला।।
जेस भावी तेस बनइ विचारा। परै न सूझ टरै नहि टारा।।
भै खल तीनों वश हंकारे। सुर अनहित करनी अरुवारे।।
द्वेष द्रोह नित लगे दिखावन। होन लाग पुर आप अपावन।।

पर वर वैभव पाछ कमाई। फरइ अकूत करै वृद्धिताई।।
राखहिं पुर जन सद व्यवहारहिं। पढ़हिं वेद नित शिव जयकारहिं।।
यज्ञादिक लौकिक सदकरमा। विधिवत होत तीन पुर घरमा।।
रचित मयासुर माया नगरी। रह सम्पन्न स्वरग ते अगरी।।
यज्ञ भाग गा खल बल बाहीं। ताते सुरन्ह पाउ निबलाहीं।।
जब से खल त्रय शासन कीना। सबु अधिकार आपु कर लीना।।
देव डेराहीं फिरत बेराहीं। तारक तनय गयो बरियाहीं।।
वैभव बली असुर हंकारी। शिव पूजहिं पर सुर दुतकारी।।
वर वैभव मद खल बौराने। भयो अभय सुर फिरहिं लुकाने।।
ज्यों ज्यों खल भय बाढ़ेउ लोका। त्यों त्यों बाढ़ सुरन्ह उर शोका।।
जहं विरोध सुर अघ अनचारा। पतन सुनिश्चित ब्रह्म उचारा।।
भल खल काज विरोध सुरन का। आपु रूप धरु ताहि मरन का।।

तारक पूतन ताप ते, सुर गण भै दुखियार।
करिय परस्पर मंत्रणा, पुनि गै ब्रह्मा वार।।15।।

सुरन्ह समूह कथन दुःख अपने। भागेउ गयउ विधाता शरने।।
नाइ शीश जोरे कर बानी। करत नमन बनि दुखिया खानी।।
सबै एक स्वर बैन सुनायउ। आवन कारन जइस बितायउ।।
तारक पूतन्ह कारन काहे। दीन्ह सो वर जो सुरता दाहे।।
विधि कोउ हम सब तारक मारे। तुम करि ताहि पूत बरियारे।।
जांउ कहां अब केहि शरनाई। जौ तुमहूं बनु तिन वरदाई।।
सुर विपदा विधना विपरीता। वाणी सुनि को करि परतीता।।
दूज मयासुर बड़ नीतिज्ञा। परम कुशल भव विद्या विज्ञा।।
बसि त्रयपुर बनि ता सहयोगी। नाना योग बना प्रयोगी।।
जेहि करनी बनु सुर निबलाई। सो नित साध लोक पसराई।।
सब मिलि छीनु देव अधिकारा। पुनि ऊपर ते करहिं प्रहारा।।
आखिर कौन दोष हम सब के। काव बिगाड़ेन हम जग जन के।।
जेहि ते सुर दल किहेउ अभागी। सब विधि करिय असुर कुल भागी।।
दुःख इहि केहि विधि बनु निस्तारा। त्रय खल दुःख ते मोहि उबारा।।
धरम सनातन सुर सुख तांई। करु इन्ह असुरन्ह वधन उपाई।।
जगती भार विरांचन करनी। स्वामी तुम्हीं लोक सब बरनी।।
खलन्ह हिताय नगर त्रय दीन्हा। सर्वस सुख वैभव तहं कीन्हा।।
सो सम्पदा सकै के छीनी। वर अनुरूप जाहि तुम दीन्ही।।
खल तुम्हार तुम खल वर दाता। भूलेउ केहि कारन मम नाता।।
अब शिव गृही विष्णु औंघाने। छोड़ि तुमहिं कहं दूज ठेकाने।।

जेहि विधि होइ देव हित मोरा। करि कराउ मांगउ कर जोरा।।
तुम जानत देखत का भावी। हम दुःख पाइ दुःखे प्रभावी।।

सुरन्ह आर्त वाणी सुनिय, विधना ध्यान लगाइ।
आश्वासन साहस परसि, आगे भाखु उपाइ।।16।।

सुरन्ह हितारथ विधि प्रगटावत। त्रय खल हनन उपाइ सुझावत।।
कहेउ सुनउ वसुधा हितकारी। शिव विष्णु संरक्षणकारी।।
मांनु मने तुम ते बड़ प्रीता। तजिय भीति बनि रहउ अभीता।।
जानउं त्रय पुर करन्ह संहारा। पर न सफल बिन शंभु सहारा।।
वर हमरे शोभित त्रय नगरी। पर शिव छाया बा प्रति बखरी।।
रहा व्यापि त्रय पुर सदचारा। होहि यज्ञ तहं वेद विचारा।।
मानव धर्म नगर जन साधे। पाउ प्रविशि नहि रोग बियाधे।।
जेतिक आयु विनाशी करमा। सपनेउ नाहि होइ त्रय पुरमा।।
आखिर होइ नगर केस ध्वंसा।। जहं पुनीत शिव कृपा अंशा।।
सत्य यदपि खल वर्धन हम ते। पर उपाइ कहि सकु हम तुम ते।।
तीन लोक पति भव भय हारी। शिव समान को विपति निवारी।।
अवगुन अधम अनीति अचारा। ताहि बिनाशन शिव अधिकारा।।
जौ प्रसन्न होहीं अखिलेश्वर। तौ दुःख कटइ घटहिं असुरेश्वर।।
देव कलेश विनाशन कारी। हर परिवर्तन पथ अधिकारी।।
शिव समान नाही कोउ आना। विधि अस कह सुनु सुरगण काना।।
जब जब पाउ सुरन्ह दुःख ढेरा। गवा न बिनु त्रय सुर घर फेरा।।
खल पुर हनन कहब नहि बानी। पर हम साथ देब सब खानी।।
विधना नीति विचार सलाहा। सुनि समझिय सुर भयो उछाहा।।

बुझिय परस्पर देव गण, विधना नीति विचार।
गमन करन्ह चह शंभु पुर, विधना संग तयार।।17।।

चलेउ देव गण संग विधाता। जेहि पुर बसहिं जगत पितु माता।।
देव मनावत विनय सुनावत। जेस जे तेस ते शिव गुण गावत।।
सकल देव इन्द्रादिक साथे। पहुंचेव नगर जहां जग नाथे।।
शोभित जहं जग पुरुष सनातन। बैठे सहित शिवा संग आसन।।
नाइ शीश नमनेउ बहु बारा। अस दिखात जेस बड़ दुखियारा।।
सबै देव मिलि शंभु दुवारी। शरणागत स्वर एक निकारी।।
अनथिर मन नयनन जल छाये। अस लागहिं जेस बहुत सताये।।
सुरन्ह दशा अवलोकि महेशा। मन धारिय हरुं अवसि कलेशा।।
आदर कीन्ह नेह दरसावत। आपुहि पूंछु काह केस आवत।।
कहउ व्यथा निज हृदय उघारी। पुरउब अवसि भाखु त्रिपुरारी।।

सुनत स्वामि वाणी अनुकूला।। उभरा चेत हृदय सुख फूला।।
निज निज आसन देव विराजे।। पुनि भाखेउ आयन केहि काजे।।

विश्वनाथ हम देवगण, त्रय खल ते भयभीत।
जांउ कहां केहि लोक अब, नाहि सकउं तिन जीत।।18।।

परम अलौकिक खलन्ह प्रभूता।। करहिं पाठ श्रुति यज्ञ अकूता।।
जेतिक लोक ऋषी मुनि सन्ता।। खल पुर बसहिं मुदित अत्यन्ता।।
सदाचार तेहि पुर व्यवहारा।। छीनि उठेउ देवन्ह अधिकारा।।
तापर बड़ वर दीन्ह विधाता।। रहन्ह अभेद युगे दिन राता।।
चलहिं नाहिं सो शास्त्र विरोधन।। परम बली कुछ न अवरोधन।।
भले असुर पुर बा भल करनी।। पर भै लोक दुःखी बा धरनी।।
तीरथ व्रत देव प्रभुताई।। हीन करहिं नित अधम बढ़ाई।।
त्रिपुर निवासी बड़ बलकारी। सुर अरि जांनु परम हंकारी।।
करउं प्रभू नव नीति विधाना।। रक्षा जग बनु बचु सुर प्राना।।
इहि विधि जोरि हाथ जल नयने।। बोले दीन भाव सुर बयने।।
नावत शीश दीनता गावत।। सब मिलि इक स्वर विपति सुनावत।।
जेहि विधि होइ नाथ कल्याना।। सोई करउ बचावउ प्राना।।
बड़ अनसूझ दिखाइ न राहा।। केहि विधि होइ देव दुःख दाहा।।

जाहि भांति तारक तनय, रहा देत सन्ताप।
ताहि बतायउ देव गण, और तासु प्रताप।।19।।
सुर विपदा आंसू नयन, शंभु विलोकि विलोकि।
भये दुखियारू आपु तेस, सकु न नैन जल रोकि।।20।।

करि मन थिर शिव सोचन लागे। यदपि सुरन्ह ते बड़ अनुरागे।।
पर त्रय खल त्रय पुर भगताई। वशीभूत रहु जगत गोसांई।।
ताहि भूलि केस करउं विरोधा। सोचु ढेर पर आउ न बोधा।।
सहित सकोच कहेउ शिव बाता। त्रिपुराधीश साथ मम नाता।।
दूज न धर्म गृही अनिवारू। मीत वधउं ताकर पुर जांरू।।
इहि ते बढ़इ अधम अनचारा। लोक वैर भय कुल परिवारा।।
जानि बूझि जौ करउ अनीता। मिलु अपमान घटइ जग प्रीता।।
उपजइ रोग शोक अभिमाना। मिलु फल अवसि करम प्रधाना।।
एक ते एक देहिं पतनाई। होहि नाहि फिरि देव सहाई।।
पुण्य आत्मा जे जग होई। ताते लड़ि सुरता सब खोई।।
जे जग मोर नाम यश जापे। ताहि वधे लागइ बड़ पापे।।
भगति साधना करु दिनराती। कहउ देव बनु केस ता घाती।।
शास्त्र पुरान सुनेव सुर बानी।। बधब मीत जग कृत नादानी।।

ताहि वधे बनि जाब अभागी। मांनु न मांनु देइ जग त्यागी।।
तौ हम ताहि बधउं केहि भांती। सहत भले दुख दुसह निपाती।।
मोर भरोसा जेहि अनतर बल। हम ताको मानो कैसे खल।।
होहु देव बतरावउ मोहू। बनउं सहाइ कवन विधि तोहूं।।
लागइ दोष घात विश्वासा। ता फल बनइ होन कुल नाशा।।
मन मति बुधि बल नीति हमारू। नाही कहत तीन खल मारू।।
रह मन जासु मोरि भगताई। तिते लड़े जीतब नहि भाई।।
सुनु सबु एक और उपदेशा। काज पुण्य जब तक जेहि देशा।।
ताहि संहारन नाहि विधाना। रचा न विधना आपु न माना।।
विधि विधान वर शास्त्र प्रमाना। जे मेटइ ते असुर समाना।।
जबलुं न पांउ जाहि प्रतिकूला। जग प्रिय मांनु देहुं केस शूला।।

यदपि शंभु वाणी सुभल, पर न सुरन्ह प्रिय लागि।
चिन्ता बाढ़िय और मन, जाउं कहां अब भागि।।21।।
सुरन्ह भरोसा बूझि भय, बोले दीन कृपाल।
जाउ सबै विष्णु भवन, युक्ति मिलै ततकाल।।22।।

साफ जबाब उमापति दीन्ही। सुनि विकले सुर बड़ दुख कीन्ही।।
आज बदलु जेस शंभु स्वभाऊ। सबै परस्पर अस बतियाऊ।।
मदद न पायन आंसु बहायन। भै बदनामी हांस करायन।।
शायद सुनि खल करु किलकारी। संभव रोकइ राह हमारी।।
ताहि सुनइ के जे दुख भारा। जहां आश न पाउ सहारा।।
जौन सुझाव दीन्ह जग स्वामी। तर्क वितर्क छोड़ि भरु हामी।।
देर न करउ चलहु हरि धामा। पुनि करि सुरन्ह शंभु प्रनामा।।
शिव सुझाव जीवन दुख ढोवत। हरिपुर चलेउ देवगण रोवत।।
सुर इन्द्रादि देव गण जेते। वन्दत पहुंचेउ विष्णु निकेते।।
सबै जोरि कर करि परनामा। सुरन्ह भीड़ भै विष्णु धामा।।
यथा योग आसन अधिकारा। दइ विष्णु कीन्ही सतकारा।।
ऊंच नीच तहं भेद न भावा। आग पीछ पर गयउ बिठावा।।
मुख अवलोकि दशा पहिचानी। कुशल पूंछि बोले हरि बानी।।
कहउ सबै आयउ केहि कारन। भार हरन या भार उतारन।।
भाव दिखात दुखी अतियन्ता। इहि विधि वचन कहेउ भगवन्ता।।
भाखु भाखु आपन मन बाता। जित बल मोर करब दुख घाता।।
सुरन सगुन वाणी सुनि काना। शुभद मुहूरत मन अनुमाना।।
न दुःख भाग आश मन जागा। वाणी भाव उभरु अनुरागा।।
जोरि हाथ सब सुर इक साथा। करत प्रनाम नवावत माथा।।

बूझि सुरन्ह विष्णु प्रभूता। रोगनुसार वैद्य बलबूता।।
दीन दयाल दीन भयहारी। सुनहु प्रभु दुख सुरन्ह उचारी।।
काल विगत बहु तारक पूतन। सुरन्ह सतावहि विधि अद्भूतन।।
लै विधि वर त्रय नगर बसावा। ताते राज तीन पुर छावा।।
सुर अधिकार सकल सो छीनेव। ऊपर ते मारन मति कीनेव।।
जौ न होत बल सुर अमराई। होत न संभव आज दिखाई।।
सुरन्ह बैर राखहि मनमानी। शिव भगती खल कुल मनसानी।।
वेद पाठ सत धर्म परायन। शोभित तासु तीन पुर पायन।।
करहिं कराउ आपु सत करमा। होहीं यज्ञ आदि प्रति घरमा।।
विधि वर नगर रखावत शंकर। धरम करम रह साथे फलवर।।
पतिव्रत धरम नगर तेहि जागे। दारिद दोष आपु तहं भागे।।
जोउ पुर धर्म करम लवलीना। काल कुकाल तिते भय कीना।।
तेहि पुर भांति सकल कुशलाई। दोष एक सुर संग अरिताई।।
बरबस छीनहिं सुर अधिकारा। गहि अनरीति अन्याय कुचारा।।
धावहिं मारन सुर अवलोकी। भये सुर दीन सकै न रोकी।।
भागत फिरत बचावत प्राना। दिन गै ढेर न पाउ निदाना।।
लाग असूझ चतुर्दिक हारी। लगेउ लगावन तबहिं गुहारी।।
सुनेउं न विपति विधाता मोरी। शिव घर जाइ कहेउं कर जोरी।।

सुनि समझायउ मोहि शिव, जिते मोरु पद नेह।
ताहि बधउं केहि भांति हम, वानप्रस्थ मय देह।।23।।

वानप्रस्थ महिमा समझावत। कह शिव जो हम सो बतलावत।।
अब हम नाहि गृही पथ चारी। सुनिय गुहार आन जिव मारी।।
जग परिवार भगत जे आपन। बूझि उचित तिनते करि नातन।।
आपन आन जहां अनरीती। ताते नाहि मोर कछु प्रीती।।
भगति विचार जहां श्रुति पाठा। होत सुमंगल दिन प्रति आठा।।
ताहि वधे बनु वसुधा बानी। परम अधी शिव बल अभिमानी।।
पुनि वसुधा परिवार हमारा। चाह जो भल सो जाइ न मारा।।
धरम करम जग नयने नीती। न वध योग तीन खल प्रीती।।
होहुं सुरन्ह केस तोर सहाई। भाखि अइस शिव कीन विदाई।।
न केउ सुनइ सहाइ न लागइ। खल भल लोक लोग मुख आगइ।।
जे निहारु खल पुर भगताई। नाहि सुनइ ते देव दुहाई।।
केहि घर जाउं नाथ मुख भाखा। करउ उपाइ शरण मंह राखा।।
लागइ असह्य खलन्ह प्रभुताई। ठांव जहां तहं पहुंचेउ जाई।।
सूझ सलाह उपाइ बतावत। जग दुख हर दुर्भाग्य दुरावत।।

सुनहु हमारि मांग पुरवावा। करिय कराइ राह दरसावा।।
पाप प्रताप घटइ जेहि ढंगा। बल तुम्हरे नाही पर संगा।।
होहि देव जेहि भांति सुखारे। रचहु सोइ रचना करतारे।।

दीन बैन सजले नैन, हीन चैन उर गात।
देव दशा सुनि देवपति, अन्तर शोक जनात।।24।।
मनही मन धारण करिय, पीड़ा हरब तुम्हार।
पर उपाइ मन सूझ नहि, बोले इहि प्रकार।।25।।

धीर धरहु नहि बनउ दुखारी। अवसि हरब हम विपति तुम्हारी।।
काल कछुक इहि भांति बितावा। वन्दन नमन ध्यान शिव लावा।।
त्रय खल वधन हाथ नहि आने। करु जब लौं त्रय पुर शिव ध्याने।।
चाह हमारि हतन्ह असुराई। लोक पसारन सुख सुरताई।।
जब जब होहीं देव दुखारी। रचु उपाइ तब या तन धारी।।
अब की बेर भगति भय कारन। सरल नाहि सुर विपति निवारन।।
सूझु जथा तथ नीति बनाउब। करु विश्वास कुकाल भगाउब।।
अस कहि हरि करि सुरन्ह विदाई। चलेउ सबै निज निज सिर नाई।।
कीनेव सुरन्ह विदा सुर स्वामी। पुनि सोचिय खल परसन खामी।।
बार बार हरि ध्यान लगावा। हर कृपा हरि ह्रदय समावा।।
जौन चाह हरि सो हर भावत। एक दोउ तन दूज सुहावत।।
हर प्रेरन अन्तर हरि उपजा। सोमति हरि संशय तजि सिरजा।।
हरि ते बैर मिताई शंकर। प्रियता ताहि न रहु हर अन्तर।।
जे हरि मीत भले हर द्रोही। हर मानत आपन तिन कोही।।
जौ अस उभरु विष्णु मन अन्तर। तानुसार तौ रांचिय जन्तर।।
हरि माया पठवा खल नगरी। खल माया बिच माया पसरी।।
मायापति माया प्रभुताई। तीनहु नगर गई अधिकाई।।
जहं हरि माया दीखु निशानी। तहं खल माया फिरहिं दुरानी।।
लाग बढ़न्ह त्रय पुर खल चारा। करनी कर्म विविध अनचारा।।
धर्म जहां तहं अधरम छावा। शंभु आस्था बैर सुहावा।।
संयम नियम जहां सदचारा। मांझे व्यापेउ व्याभीचारा।।
वेद पाठ पतिव्रत बल यज्ञा। पुर ते भाग जथा सब अज्ञा।।
माया माया जानि न जाई। कुमति कलह ते बनु प्रीताई।।
एक नाहि सब मति बौरानी। बोलहिं कटु बानी सब खानी।।
विधि वर जौन तौन बनु छारा। जब माया मति व्यापु बजारा।।
कुमति नुसार नगर चरिताई। केउ केउ तजि पुर करै भगाई।।
दिन थोरे बढ़ु अधरम राशी।। जौन चाह माया अविनाशी।।

रह पुर जौन देव व्रत धारी। तहं खल वृत्ति फिरइ ललकारी।।
तेहि अनुकूल मानि खल तीनों। रहहीं मुदित ताहि लवलीनों।।

इधर निहारत देव गण, त्रय पुर चार विचार।
मिलइ जबै प्रतिकूल सो, देहीं शिव समचार।।26।।
समय प्रतीक्षित पाइ सुर, करि विधिवत पहिचान।
सुरन्ह मिलिय इक साथ चलि, विधि घर कीन पयान।।27।।

विधना बूझि खलन्ह अवगूना। सोचु बनेउ खल वर बल सूना।।
रह वर जौ चलु देव समाना। तौ जग वैभव रहहि प्रदाना।।
सत्वृत्ति त्यागि दोष वृत्ति साधे। आवत पाप पतन दुख व्याधे।।
लोक विधान विनाशन बनहीं। आज नही तो निश्चित कल ही।।
बूझि विधाता दिन अनुकूला। अवसि दुराहिं लोक सुर शूला।।
जौ सब भूलेउ शिव भगताई। जीवन चर्या लोग लुगाई।।
जाति वंश कुल धरम दुराये। कुमति कलह जेहि घर पुर छाये।।
लोकाचार विहार विचारा। सब संग जाइ व्यापि अनचारा।।
तौ थोरे दिन पाउ निपातन। सुरन्ह सुनाइ विधाता बातन।।
सुर समेत विधि करिय पयाना। वेगिअ पहुंचेउ विष्णु मकाना।।
करत प्रनाम लेत आशीषा। कुशल सुनाइ भाखु खल कीसा।।
सुनि हरि हरख कीन मन ढेरा। कह माया सब कै मति फेरा।।
जौ अघ अगुन पतन पथ प्रीती। राखइ खल तौ जावहिं जीती।।
सहहिं न शिव करहीं तेहि छारा। मांनु मने विश्वास हमारा।।
चलहु सबै शिव श्रवन सुनाई। खल तजि भगति अधम अपनाई।।
मानि विष्णु मति सुरन्ह विधाता। कीन पयान जहां सुख दाता।।
नावत शीश करिय परनामा। सहित सुरन्ह गिरिजापति धामा।।
जोरि पानि करि विनय अपारा। विधि विष्णु मिलि सुर परिवारा।।
नमः शिवाय शिवायै जापत। जब तब कुछ आपन भय भाखत।।

तीनहु पुर खल कुल सहित, करत परम अधमाइ।
तासु अधम बिनु तुम कृपा, जानउं नाहि दुराइ।।28।।
जाहि विधाता देहिं रचि, हरि बनु पालनहार।
रहइ न जौ अनुकूल जग, तौ तुम करु संहार।।29।।
प्राण रूप सुख सिन्धु प्रभु, जगत आत्मा रूप।
विविध भांति विनती करिय, सहित ब्रह्म सुर भूप।।30।।
जय देव जगन्नाथ जयति शंकर शाश्वत।
जय सर्व सुराध्यक्ष जयति सर्वसुरार्चित।।1।।

जय सर्व गुणातीत जय सर्ववरप्रद।
जय नित्यनिराधार जय विश्वम्भराव्यय।।2।।
योगिनो यं हृदः कोशे प्रणिधानेन निश्चलाः।
ज्योती रूपं प्रपश्यन्ति तस्मै श्री ब्रह्मणे नमः।।3।।
कालात्पराय कालाय स्वेच्छया पुरुषाय च।
गुणत्रयस्वरूपाय नमः प्रकृतिरूपिणे।।4।।
विष्णवे सत्वरूपाय रजोरूपाय वेधसे।
तमोरूपाय रुद्राय स्थितिसर्गान्तकारिणे।।5।।
नमो नमः स्वरूपाय पंचबुद्धीन्द्रियात्मने।
क्षित्यादिपंचरूपाय नमस्ते विषयात्मने।।6।।
नमो ब्रह्माण्डरूपाय तदन्तर्वर्तिने नमः।
अर्वाचीनपराचीनविश्वरूपाय ते नमः।।7।।
अचिन्त्यनित्यरूपाय सदसत्पतये नमः।
नमस्ते भक्तकृपया स्वेच्छाविष्कृतविग्रह।।8।।
तव निःश्वसितं वेदास्तव वेदोऽखिलं जगत्।
विश्वभूतानि ते पादः शिरो द्यौः समवर्तत।।9।।
नाभ्या आसीदन्तरिक्षं लोमानि च वनस्पतिः।
चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यस्तव प्रभो।।10।।

त्वमेव सर्वं त्वयि देव सर्वं,
सर्वस्तुतिस्तव्य इह त्वमेव।
ईश त्वया वास्यमिदं हि सर्वं,
नमोऽस्तु भूयोऽपि नमो नमस्ते।।11।।
शम्भो महेश करुणामय शूलपाणे,
गौरीपते पशुपते पशुपाशनाशिन्।
काशीपते करुणया जगदेतदेक,
त्वं हंसि पासि विदधासि महेश्वरोऽसि।।12

आदि अनादि अनन्दमय, प्रभु प्रकृति सब रूप।
स्रष्टा द्रष्टा लोक पति, तीन देव भव रूप।।31।।

योगी रूप सकल सुख भोगी। भव भयहारी परम वियोगी।।
स्थिति सकल परिस्थिति रूपा। दीनबन्धु वसुधा सुर भूपा।।
तेजो राशी दीन दयाला। विपति निवारी हर कलिकाला।।
शरनागत सेवक सुखदाई। दूज नाइ जग प्रभु तुम नांई।।
भूलु तुमहि जे ते दुख पावत। आइ चरन जे विपति सुनावत।।
आपन जानि विदारत शोका। करि कृपा कछु सुरन्ह विलोका।।
सहत दुगति बहु काल गुजारे। चला न बल तब आउ दुवारे।।

तुम सब जानत जानन्ह वारे। आवन्ह कारन स्वारथ सारे।।
नाहि सहाइ मोर जग कोऊ। समरथ शकति जिमे बल होऊ।।
सहित विधाता विष्णु देवा। जय जय करत कहत महदेवा।।
तुम समान को विपति निवारी। अधम विनाशि धरम धन धारी।।
सदा तिनहिं तुम आपन जाना। वन्दहिं जोऊ शिव लिंग प्राना।।
सुनि सुर विनय शंभु स्वीकारी। मानि शरण पर वचन उचारी।।

कह महेश सुनु देवगण, तुम्हरो अइस स्वभाव।
बेर बेर मम हाथ ते, असुरन्ह शीश कटाव।।32।।
जौ तुम ते हम प्रीति करि, तौ करि पाप वरीस।
काह न लागत मोहि अघ, काटे असुरन शीश।।33।।
शंभु भाव पहिचानि विधि, मनहूं जौन समान।
तानुसार कीनेव विनय, कह खल अगुन निधान।।34।।

शंकर नीति वचन पहिचानी। जोरि पानि बोले विधि बानी।।
नाथ विष्णु हम रूप तुम्हारे। तुम संहारक तुम निरमारे।।
पाप पुण्य तुम दोऊ रांचत। तुमहिं निदेशे जग जन वाचत।।
जहं असमर्थ नाहि बल लागत। चरन शरन परि आइ पुकारत।।
आन पाप जे करत संहारन। नाम लेत बनु पाप विदारन।।
पावत दरस तरहिं अपराधी। जेतिक नीच दुखी भव व्याधी।।
जहां चरन परु तहं अमरीता। बरसइ धरम विचार पुनीता।।
समरथ को नहि दोष गोसांई। लोक विधान कहत तुम तांई।।
जग जित ते रक्षण हित आपन। सब संग मिलत तुम्हारउ हाथन।।
सुरन्ह समेत आइ शरनाई। मांगत रक्षा प्राण की तांई।।
जो नहि जग हित ताहि विदारन। नीति तुम्हारिय कीन प्रचारन।।
जीव स्वभाव सो आप स्वभाऊ। जगत स्वभाऊ तिमे समाऊ।।
ब्रह्म वचन मति देत समर्थन। बोले विष्णु भाव समर्पन।।
पाप पुण्य सब तुम निरधारत। ताहि उबारत पाइ जे आरत।।
तुमहिं स्वभाव विदारन वोहू। मिलु जग आन सतावत जोहू।।
गो द्विज सुर जे यज्ञ विरोधी। अस भव कंटक तुम इक शोधी।।
प्रजा रूप संसार तुम्हारा। सकल नियंत्रण पर अधिकारा।।
जौ तुम आपु फिरउ बगिलाई। सृष्टि व्यवस्था जाइ दुराई।।
तुम उपदेश विचार तुम्हारे। सुर नर मुनि खल जग स्वीकारे।।
नहि बहकाउ जाइ कहं देवा। इक आधार चरन महदेवा।।
खल नहि करहिं नाथ भगताई। भांति विविध रह पाप बढ़ाई।।
होंहि देव जेहि भांति दुखारी। कृत विलोकि सो दुःख बनु भारी।।

खल विरोध मा नाहि हम, कह हरि खल अधमाइ।
रहा न खल भल जग रहन्ह, तुम बिनु न बधि जाइ।।35।।
सुर स्वारथ विधि हरि वचन, सुनि हरखे जग नाथ।
कह मनोर्थ पूरण करब, राखु मने मति माथ।।36।।
सुरन्ह एक स्वर नाद करि, जय जय कृपा निधान।
जन शरनागत करि विनय, बनहीं अवसि महान।।37।।

बूझि विष्णु विधि शिव अनुकूला। मोद समान हृदय सुखफूला।।
जोरि पानि भाखिय मन भावन। वेगि करहु प्रभु असुर नशावन।।
करहु कृपा दीजइ वर एही। नाशहु त्रिपुर संग खल देही।।
भयउं अभय तुम ते स्वीकारे। पर न चैन चित बिनु संहारे।।
करि का हम सब इहि हित हेता। कहउ कृपा करि कृपा निकेता।।
बानि विचार धरम रत सानी। अति मन मुदित कहेउ सुखदानी।।
समुझ मने भा खल संहारन। पर रण हेतु न रण हथियारन।।
तासु व्यवस्था मंह दिन जितने। त्रय पुर नाशन देरी उतने।।
रण रथ बान धनुष हथियारू। होहिं देव मय जग हितकारू।।
सुरन्ह बूझि जग स्वामि सुझावन। जहं जे जेस ते तहं लगु धावन।।
आयउ विश्वकर्मा शिव नगरी। रण रथ रचन्ह क्रिया विधि संचरी।।
असुर असुरता मति संहारन। सुरन्ह सुनावहिं विविध विचारन।।
जेहि विधि जाइ लोक खलताई। मति अनुसार सबै तेस गाई।।
हेतु विजय खल बल अनुसारे। जौन सहाइ बनै करतारे।।
सुरन्ह प्रयास तथा मति मंतर। गयउ संजोइ जौन प्रिय शंकर।।
लाग बनन्ह रण वाहन वैसे। होहीं छार असुर पुर जैसे।।
देर न लागि दिवस दुइ चारे। समय जात रथ भयउ तयारे।।
रथ विलोकि सुर गण हरखाने। शिव सन्मुख तेहि लायउ आने।।
डारत दृष्टि समर बल जागा। अन्तर नेह नीति अनुरागा।।
छटा यान नहि जाइ बखानी। लागत करु आपुहि खल हानी।।

रथ विलोकि शिव मुद बनेउ, स्वयं कीन स्वीकार।
मति विश्वकर्मा धन्य कह, होन लाग जयकार।।38।।
सकै न चढ़ि सब तेहि रथे, अस अद्भुत प्रभुताइ।
तिमे न वेधइ शाप कोउ, विधि मुख अपने गाइ।।39।।

रथ बड़ दिव्य रचिय विश्वकर्मा। हेतु महेश लोक हित धर्मा।।
मन मति पूरक कलिमल हारी। सर्व देव बल शकती धारी।।
रथ बल दीन्ह सुरन्ह अस रांजी। सकै जौन त्रिपुर बल भांजी।।
सुर पुर शकति बसै तेहि अन्तर। सो रथ दरसइ जेई निरन्तर।।

सर्व भूत हित जग अनुकूलन। तेज ओज हर दुख दिन शूलन।।
सुबरन रंग दिव्य ज्योताई। नहि देखन्ह क्षमता खल तांई।।
महिमा तासु पसरु चहुं कोने। धाउ सुरन्ह देखन्ह अघ धोने।।
तिन अन्तर सुरताइ समानी। भूल सुधार गठन मति आनी।।
पावइ जिते विजय सुरताई। युग परिवर्तन मति उभराई।।

रथ रचना परिचय संगे, विधिना सबै सुनाइ।
बुधि विश्वकर्मा सर्वमत, जेस रह तिमे समाइ।।40।।

रथ रुचिराइ महेश मनोहर। बूझि सुरन्ह मुद छाउ सबों उर।।
ताहि रथे चक दांये बांये। रवि शशि सोह कला निज लाये।।
चक्रन्ह अरा रूप दृढ़ताई। व्रत नुष्ठान द्विजन्ह प्रभुताई।।
ऋतु रथ नेम सोह अगभागे। अन्तरिक्ष बल तित अनुरागे।।
उदया अस्ताचल सम कूबर। आपु सुहानु रथासन ऊपर।।
शाखा रूप विविध ढंग द्वारा। लागत मंदराचल अनुहारा।।
कील कला बनु तासु किवारे। उतर दक्षायण वेग प्रकारे।।
चेहरा भांति रूप धर वाहन। घ्राण दृष्टि शकती अवगाहन।।
गा बनि पर्दा लोक द्युलोका। मुकुति स्वर्ग ध्वज रूप विलोका।।
जुआ प्रकृति पांच बल साथे। काम धेनु शैला बनु राथे।।
सोहा अंग अंग श्रुति सुर सन। चाल रूप गति श्वांस नुरूपन।।
वर्ण आश्रम पाद नुहारे। बल विवेक शुभ लक्षण वारे।।
लागे रतन रूप रज वन्धन। दिशि उपदिशि दरसावत पंथन।।
धातु सात बनु ईंधन ताके। गंगा नीर संवारत वाके।।
तीरथ यज्ञ शैल शुभ धरनी। तिमे ठांव विश्रामें वरनी।।
करत परिष्कृत जय तप नेमा। सहित सुकर्म सुपावन प्रेमा।।
देव तीन गुण त्रय त्रिकाला। लागेउ बन्धन रूप सुताला।।
ब्रह्म सारथी थामु लगामें। हांकि न पाउ दूज बसि तामें।।
वेद चारि रथ अश्व नुहारे। चाबुक रूप सोह ओंकारे।।
रथ हय भूषण ज्योति स्वरूपा। रहेउ संवारा ढंग अनूपा।।
धनुष प्रत्यंच हिमालय ढंगे। घण्ट निनाद सरसवति अंगे।।

परम अभय रथ प्राणमय, सोहत मनु आकार।
त्रिपुर असुरता दोष हर, हेतु शंभु असवार।।41।।

गुरु पितु मात ऋषी सेनानी। फिरहिं करत रण रथ अगुवानी।।
रथ विलोकि हरखहिं सुर नाना। अति अनूप नहि जाइ बखाना।।
रथ शिव सोह विलोके झांकी। महिमा तासु जाइ नहि आंकी।।
जे करि दरस प्रज्ञा तेहि जागी। आपु बनइ भव दोष विरागी।।

विधि विवेक विश्वकर्मा करनी। सोह जहां सो तर वैतरनी।।
हेतु बना त्रय पुर अघ नाशन। करन्ह दूरि वसुधा खल बासन।।
भाव श्रद्धा शुभ योग समे तन। कीन देव गण रचना तेकन।।
रथ निहारि हरखे अखिलेश्वर। शक्ति प्रकृति जिमे सर्वेश्वर।।
निरनिमेष तेहि शंभु निहारी। बूझि नुकूलहि वचन उचारी।।
बड़ अद्भुत रथ बड़ प्रभुताई। बना न आगु बनइ इहि नांई।।
मनुज चेतना सोह रथे जेहि। उपमा तासु बतावउं सम केहि।।
रथ माया माया बल बूता। अंग अंग अस देहि सबूता।।
देखत बनै बतावत नाही। पांच रतन बल संग जेहि मांही।।
खल वध कारन शिव बल धारन। साधि सकै जो ता अनुहारन।।
दुर्गा शकति सुरन्ह जिमि रांचा। तानुसार बनु इहि रथ ढ़ाचा।।
ध्याइ रूप रथ जे रखु गाता। हरखहिं तिते जगत पितु माता।।
गो द्विज सुर बल बसु उर ताके। रोग शोक यम नेर न वाके।।
देइ बदलि युग कलिमल नाशै। पुरवहि चाह सुपथ अभिलाषै।।
भव दुख हारी खल अघ नाशी। लोक हितारथ सुर सुखराशी।।
विनय निवेदन लाइ विधाता। अर्पण करिय विश्व पितु माता।।
सर्व देवमय रथ प्रभुताई। पावन जानि शंभु अपनाई।।
सुर गन्धर्व देव दिक्पाला। हरखिय कीन विनय ततकाला।।

समरथ रथ अवलोकि शिव, कीनेव डमरू नाद।
कीनेव रथ हय गर्जना, भागु देव अवसाद।।42।।
विष्णु देव विधि करि नमन, बार बार शिर नाय।
लगेउ देन पुष्पांजली, जगपति जयति सुनाय।।43।।
सारथि पद विधना गहेउ, थामिय घोड़ लगाम।
जय निनाद ते गूंजु नभ, जौ बैठेउ सुख धाम।।44।।

राजि रथासन आनन्दराशी। कृपा दृष्टि चहुं ओर विकासी।।
सुरन्ह सुझावत आयसु बानी। कीन्ह प्रगट वसुधा सुखखानी।।
मिलेउ रथासन इहि दिन जोई। तासु निदेश सुनहु सब कोई।।
बार बार सुर हारन कारन। दीखि परइ इक पशुता धारन।।
कामुक कर्म द्वेष अधिकाई। फूट कलह आपस ईर्ष्याई।।
विघटन भाव कथन पर दोषा। हर एतिक सुरता बल कोषा।।
रहु जब लौं अन्तर पशुताई। लड़े न जीति जाइ खलताई।।
रथ वैभव सब भांति पुनीता। पशुता वधे सकै बनि हीता।।
लीन्ह भार त्रय पुर खल नाशन। सो हम करब असंशय साथन।।
पर बिनु सधे सुधारन आपा। जाइ न काहु मनेउ संतापा।।

बार बार करि खल वधनाई। भगै न भय साधे पशुताई।।
पशुपति नाथ रूप इहि बेरी। मानहु बैन सुनावहु टेरी।।
जे नहि मांनु सुने निज काना। गनब ताहि हम असुर समाना।।
सुरता नाशु पाश पशुताई। वन्देउं पशुपति मिलु मुक्ताई।।
व्रत पाशुपत जे करि साधन। खल भय नाहि व्यापु तेहि साथन।।
शिव वर बैन सुरन्ह स्वीकारा। नीति चलाइअ आप सुधारा।।

गठन भाव सहकार मति, आपु सुधारन नीति।
सुरन्ह यूथ संकल्प लेइ, जिते जाइ खल जीति।।45।।
सुर ब्रह्मादिक मिलि सबै, कीन विनय करजोरि।
नाथ कृपा इतना करहु, कुमति दुरावहु मोरि।।46।।

स पातु वो यस्य जटाकलापे,
स्थितः शशांकः स्फुटहारगौरः।
नीलोत्पलानामिव नालपुंजे,
निद्रायमाणः शरदीव हंसः।।1।।
जगत्सिसृक्षाप्रलयक्रियाविधौ,
प्रयत्नमुन्मेषनिमेषविभ्रमम्।
वदन्ति यस्येक्षणलोलपक्ष्मणां,
पराय तस्मै परमेष्ठिने नमः।।2।।
व्योम्नीव नीरदभरः सरसीव सरसी
वीचिव्यूहः सहस्रमहसीव सुधांशुधाम।
यस्मिन्निदं जगदुदेति च लीयते च,
तच्छाम्भवं भवतुवैभवमृद्धये वः।।3।।
यः कन्दुकैरिव पुरन्दरपद्मसद्म,
पद्मायतिप्रभृतिभिः प्रभुरप्रमेयः।
खेलत्यलंहयमहिमा स हिमाद्रिकन्या,
कान्तः कृतान्तदलनो गलयत्वघं वः।।4।।
दिश्यात् स शीतकिरणाभरणः शिवो वो,
यस्योत्तमांगभुवि विस्फुटदूर्मिपक्षा।
हंसीव निर्मलशशांककलामृणाल
कन्दार्थिनी सुरसरिन्नभतः पपात।।5।।

भस्म अंग मर्दन अनंग संतत असंग हर।
सीस गंग गिरिजा अर्धंग भूषन भुजंगवर।।
मुंडमाल बिधुबाल भाल डमरु कपालु कर।
बिबुधवृंद नव कुमुदचंद सुखकंद सूलधर।।

त्रिपुरारि त्रिलोचन दिग्वसन, विषभोजन भवभय हरन।
विनय करत सुर सेवत पद, शिव शिव शिव शंकर सरन।।47।।
सुरन्ह विनय शंकर सुनिय, आप सुझाव सुझाइ।
कह बिनु सुधरे आपु तन, आन दोष न जाइ।।48।।

शंकर रूप जगत हितकारी। मानि वचन सुर बनु व्रत धारी।।
आपन अन्तर दोष निवारन। समय समेत लगे व्रत धारन।।
चौबिस बारह तीन बरस के। लघू दीर्घ नुष्ठान संभल के।।
जेस जे ते तेस करि संकल्पा। नाशन पशुता बड़ अरु अल्पा।।
व्रत पाशुपत सुर मन जागा। सविता ध्यान लाइ अनुरागा।।
आपन दोष जाइ जेहि खानी। चाहत जौन लोक सुखदानी।।
तानुसार व्रत सुरन्ह उठावा। पशुपति जौन निदेश चलावा।।
होत जथा सदगुरु शिष्य नाता। तानुसार शिव सुरन्ह विधाता।।
निज पशुता जब सुरन्ह गवांये। तब खल वधन शंभु मन लाये।।
प्रचलन आदि काल बनु जैसे। युग बदलन उपजी विधि वैसे।।
सुरन्ह शोध बल शंभु निहारे। कहेउ मुदित बनु खल संहारे।।
सो सुर बनेउ शंभु सेनानी। जिन शोधिय आपुन्ह तन बानी।।
अगल बगल विधि विष्णु सोहे। खल वध आश सबै मन जोहे।।
हेतु काज कोऊ सफलाई। सुर विधान गणपति शिर नांई।।
सहित सेन रथ शिव तैयारी। हेतु विजय विधि वचन उचारी।।
गं गणपति सब करहु मनावन। पाछ करहु रण पांव बढ़ावन।।
विधि निर्देश बूझि अनुकूला। गै पद पूजि शुभद जय मूला।।
विध्न विनाशक जय जय कारत। शिव सन्मुख सुर कह वच आरत।।
नाथ करहु रण हेतु पधारन। रण रथ भयउ शंभु असवारन।।
विधि विष्णु नन्दी गण नेकन। शिव साथे भै देव प्रत्येकन।।
रण भेरी स्वर गगन समाने। पशुपति जयति सुनिय सबु काने।।
नाना सगुन जाइ नहि बरना। जब खल वधन उठे शिव चरना।।

लुकी झुकी नहि बात सो, त्रय खल श्रवने कान।
आवत सुर गण हेतु रण, करन्ह मोहि शमशान।।49।।

सुरन्ह पछारी अति बल कारी। विधि वर धारी मन हंकारी।।
जोड़ तासु नहि आग पछारी। महामदी त्रय पुर अधिकारी।।
जेहि बहु मारी भवन निकारी। ताहि रणे सुनि को चुप मारी।।
सुनत खलेश सुरन्ह रण बाता। जल भुनि गवा सहा नहि जाता।।
सुनत सेन मिलि तीनहु भाई। बिनु न्योते चलि गै रण तांई।।
करत गरजना घोष सुनावत। आपुहि रण हेतू गोहरावत।।

देत चुनौती कटु प्रकारा। कहत ठहरु आवत तोहि वारा।।
देइहौ अबकी स्वाद चखाई। जौन न चीखा फिरेउ बचाई।।
नाना भांति दिखावत भीता। आवत गर्जत करत अनीता।।
ठहरु ठहरु अब होइ न देरी। लेहू फल कीनेव रण भेरी।।
बनु जेस तेस भय गर्जन लावत। करब संहारन वचन सुनावत।।
तीनहु खल पहुंचेउ सुर नेरे। भय आंतक दिखावत घेरे।।
मारन हेतु शरासन ताने। हाले दिग्पति देव डेराने।।
मोद जहां मन खेद समावा। त्राहि त्राहि सुर वचन सुनावा।।
खलन्ह अनीति अन्याय विलोकी। सके न शंभु आपु रिसि रोकी।।
गै बनि महाकाल अवतारी। रुद्र रूप वसुधा लयकारी।।
आपु शरासन शंभु संवारा। अग्नि रूप विस्फोट प्रकारा।।

चाप खैचि शर छोड़ि शिव, ने दीन्ही ततकाल।
दग्ध होन लग तीन पुर, बनु सो त्रय खल काल।।50।।

त्रय पुर जरेउ बाण त्रिपुरारी। शिव विलोकि खल विनय उचारी।।
जन्महुं नाथ जगत बनि जोई। भगति तुम्हारि न भूलउं कोई।।
देहु एक वर कृपानिधाना। इत कहि खल भे राख समाना।।
जरा तीन पुर बचा न कोऊ। जेस कल्पान्त भस्म भव होऊ।।
जय जयकार करन्ह सुर लागे। कहि त्रिपुरारि वचन मुख त्यागे।।
परमानन्द मुदित मन भाऊ। विविध विनय सुर यूथ लगाऊ।।
जेस विस्फोट भये जग मांही। पलनिमेष भव जात नशाहीं।।
तानुसार शिव कोपे कारन। जरा तीन पुर खल बुधि धारन।।
खल विश्वकर्मा मय बुधिरासी। बचा एक भगती पति काशी।।
अति भय भीत नयन सजलाई। गा परि शंभु शरन चितलाई।।
त्राहि त्राहि करि विनय बहूता। मांगेउ प्राण नमत अवधूता।।
परम दयालू दीन कृपाला। सुनेउ तासु विनती ततकाला।।
भयो मुदित वर दीन्ह अभीता। मांगु जौन सो भाव विनीता।।
कह महेश सांची भगताई। मोहि पियारि रखावहुं तांई।।
जाहु चला तुम पुर पाताले। परम सुखी बनु जीवन काले।।
पुर भल नाहि भली भगताई। कुल भल नाहि जो बनु दुःखदाई।।
नावत शीश वचन स्वीकारा। लै कुल मय पाताल पधारा।।
प्रविशि तहां गावत गुण शंकर। साधत शैव भगति मन मंतर।।
इत सुर सेना विष्णु विधाता। पाइ अमर वर बल सुख दाता।।
आपु सुधारि चलन्ह तेस लागे। राखिय मनहु शंभु अनुरागे।।
सबै देव दल भयो सुखारे। आपु साधि पद गहि त्रिपुरारे।।

वान प्रस्थ तन जीवन धारी। सहित शिवा शिव काशि पधारी।।
जेहि विधि बनै लोक उपकारा। आपु करहिं करि आन इशारा।।
वर्णाश्रम व्यवहार निभावत। वानप्रस्थ पद मान बढ़ावत।।
नाशहिं शंभु लोक असुराई। तेहि युग जौन विश्व दुःखदाई।।
युग अनुसार करै खल करनी। गो द्विज सन्त दुःखी बनु धरनी।।
देव दोष जहं जन मन मैला। उपजइ आपु तहां खल थैला।।
भागहिं सुर गण ईश गुहारी। सकै जौ निज भय नाहि निवारी।।
सुरन्ह समेत हरी हर विधना। सुनिय विनय करहीं खल निधना।।

पर शिव वसुधा हेतु हित, वर्णाश्रम पथ साधि।
रण रांचत खल वध करत, नाशत लौकिक व्याधि।।51।।

देखि राम बन नारी भटकन। शंभु संवारेउ वर्ण आश्रमन।।
मनुज हितारथ सुरन्ह सुखारे। कारज शंकर चलु अरुवारे।।
मानव जीवन धर्म विकासन। करि महेश लै संग शिवासन।।
जौ करि वानप्रस्थ प्रवेशा। एक नाइ अधि ढेर खलेशा।।
तारक वंश त्रिपुर खलताई। मिलु जित शिव करि ताहि नशाई।।
वर्णाश्रम चारा व्यवहारा। आपु साधि करि युग निरमारा।।
अनुचित धरनि विलोकिय जोई। ढूढ़ि महेश विदारिय सोई।।
सहित उमा शिव करत निभावन। शास्त्र पुराण जौन करि गावन।।
जेतिक अन्तर दोष देह के। उपजत सो गहि कोउ नेह के।।
अन्तर दोष विकसहीं जबहीं। मति आसुरता राचहिं तबहीं।।
जाइ मनुजता आपु बिलाई। करुणा करइ देव सुरताई।।
इते करिय शिव वचन उचारन। करहु देव गण आपु सुधारन।।
करउं कहां लौं खल संहारन। उपजु न खलता करु सो धारन।।
रण ते घटति असुरता नाही। जब लौं नहि सुरता मन मांही।।
इहि कारण वर्णाश्रम साधा। दोष मुक्ति दइ हरु अपराधा।।
वेद शास्त्र जो भाखु पुराना। प्रद सुरता सो नियम निधाना।।
आप सुधारन सुरन्ह समेता। दीन्हेउ आयसु कृपा निकेता।।
पर गुरु दैत्य परम विद्वाना। समय नुसारे ढूढ़ ठिकाना।।
देइ उभारि लोक असुराई। बेर न इक देखा बहु दांई।।
देव विकल बनि भागत फिरहीं। शरने तीनों देव उबरहीं।।
भरा पड़ा इतिहास पुराना। देवासुर संग्राम प्रमाना।।
इतेउ दीन्ह उपदेश महेशा। आपु सुधारन सरल सन्देशा।।
नाही रण न लगु बल आना। आपु बले रक्षण अपनाना।।
अस विधि सरल जे साधन जाना। युग अनुकूल सो करु निरमाना।।

ज्योतिलिं दर्शन

श्रीसोमनाथ

श्रीमल्लिकार्जुन

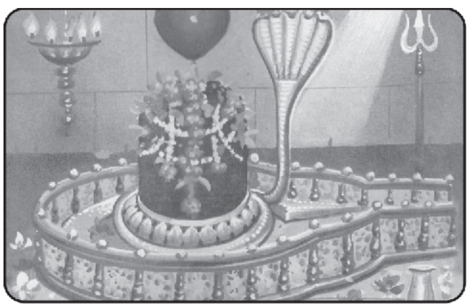

श्रीमहाकालेश्वर

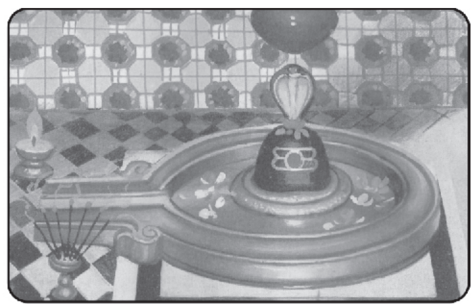

श्रीओप्रारेश्वर, श्रीअमलेश्वर

श्रीकेदारनाथ

श्रीभीमेश्वर

देश परिस्थिति काल पर, लहत न कवनव योग।
उपजहि कवनव दोष जौ, करइ असुरता भोग।।52।।

दैत्य गुरू तेहि देहि बढ़ावा। गये बाढ़ि न मिटइ मिटावा।।
तौ अनरीति अनीति वियापे। पर धन हरन कलिक संतापे।।
बल मद अहंकार प्रभुताई। काह न को जग आन सताई।।
सुरन्ह स्वभाव दूरि इहि करनी। वेगि बढ़हि खल प्रभुता धरनी।।
सुर समेत त्रय देव विचारे। जौ गुरु दैत्य न रहु संसारे।।
बधब न ठीक करब अपहरना। सुर समूह अस कीन मंत्रना।।
पर अनीति नाही सुर काजू। करन हरन गुरु दैत्य समाजू।।
करि अपहरन रखइ केहि ठांऊ। सोच सलाह थिरानि न काऊ।।
पर मन नीति चाह सब लाई। हरिय दैत्य गुरु मिलु सफलाई।।
होहिं विगत जबहीं कुछ काला। समर सुरासुर उभरु बवाला।।
अवसर तेहि अन्धक बलवाना। सुर द्रोही करु सो रण ठाना।।
जासु लड़े सुर प्रान बचाई। लड़ै न भागै शिव शरनाई।।
खलन्ह स्वभाव सुरन्ह सुख छोरन। जीति समर भय देहिं बरोरन।।
एक बार अन्धक रण रांचेउ। सुर सुरताई शकती घातेउ।।
भले लड़े सुर पर गये हारी। भा असूझ शिव धाम पधारी।।
त्राहि त्राहि सुर विनय सुनावत। गहिय शंभु पद शीश नवावत।।
आउ न नियम दुगति दुख भाखे। कह बिनु नाथ कृपा को राखे।।

देव दुगति विकलाइ सुनि, शंकर सूझु उपाइ।
बिन रांचे रण संग खल, सुर दुःख नाहि ओराइ।।53।।

नन्दी आयसु शंभु सुनावा। कुछ गण सेन सजाइ ले आवा।।
अस्त्र शस्त्र आयुध बलधारी। सकै जौन खल समर पछारी।।
आयसु अनुसारे शिव सेना। भये तयारि सहयोग प्रदेना।।
सुरन्ह समेत शंभु सेनानी। नाइ शीश बनि बल वरदानी।।
अविलम्ब खल ते समर मचावन। कीन्हेउ गरजि तरजि सब आवन।।
घुमरेउ सुरन्ह विलोकि खलेशा। मद हंकार दिखाइ विशेषा।।
कह चलि आउ करहु नहि देरी। लेहुं देखि भुज शकती तेरी।।
बाजी रण भेरी दोउ ओरी। मचिय रणस्थल लोहू होरी।।
निज निज आयुध सब सन्धाने। करि इक दूजेउ कोप रिसाने।।
कृपा दृष्टि शिव जाहि विलोके। भयो प्रबल ता रण को रोके।।
मारु मारु धरु धरु धरु मारू। समर कोलाहल विविध प्रकारू।।
करि माया खल करै प्रहारा। पर शिव सेन ताहि संहारा।।
नाना भांति पिशाच पिशाची। करहिं महाधुनि रण थल नाची।।

होन लागि खल सेन विखण्डा। सुर शिव सेन समर प्रचण्डा।।
खल अकुलान देखि रण हाला। जीत आश गै देखइ काला।।
अस्त्र शस्त्र बल रहा न बाकी। मारा देखि विफल केहि झांकी।।
देखि सेन खल गै मुरछाई। अन्धक रण इच्छा बिसराई।।
शिव सेना बल रण मैदाना। सका न आड़ि असुर खिसियाना।।
भागन राह विलोकन लागा। भीज रुधिर तन असुर विभागा।।
जीत विलोकि शंभु सेनानी। गाये जयति शिवा शिव बानी।।
भागे खल पर करहिं न वारा। शिव निर्देशन सुरन्ह संवारा।।

हारे मन रुधिरे वदन, आहत रथ असवार।
सम कायर अन्धक भगेउ, गुरु गृह कीन गुहार।।54।।

धरि शुक चरणे अन्धक माथा। लाग कहन्ह रण दुर्गति गाथा।।
पीड़ित वार महाभय सानी। हार समर उर लाज समानी।।
सुधि रण दशा नैन बनु सजला। कह गुरुदेव आज बनु निबला।।
सुरन्ह समर मोहि रही न शंका। आये शिव गण रण बल बंका।।
आवा रहा काल नियरारे। बचेउ कृपा गुरु प्राण हमारे।।
रह जित सेन सबै मुरछाये। हम लै प्राण बतावन आये।।
साहस न अब करन्ह लराई। भयउ काल बल देव सहाई।।
हारे मन बल मोर हेराने। बिना सेन को शर सन्धाने।।
हाथ जोरि अंधक अस गाइअ। जीति न पाइब शिर पद लाइअ।।
रहब कहां अस सोच अगन्ता। ठांव भाखु चलु भागि तुरन्ता।।
नाहि मोर जग दूज सहाई। बोलत नाहि काह चूपाई।।
संभव अरि सेना इहि आवइ। सो भय लागि न चित थिर पावइ।।
दीन दशा दुरगति अन्धक के। सुनिय व्यथा बनु अन्तर शुक के।।
ढाढस धीर बंधावन लागे। कह बल लाउ सकल भय त्यागे।।
जिता नाहि जो सकै न जीती। तजहु न रण करु मन परतीती।।
तुम समान नहि सुर बलवाना। भल करि भागि बचायउ प्राना।।
जेहि विधि देह देश बनु रक्षण। धर्म सोई जीवन शुभ लक्षण।।
जिन्ह शरणागत जानहुं आपन। अवसि करहु ता विपति निपातन।।
चलहु चलब हमहूं रण खेते। देखब का बल कृपानिकेते।।
सुनि शुक वाणी समर पधारन। अन्धक उर भा बल उद्गारन।।
बची सेन संग शुक अगुवाई। अन्धक चलेउ पुनः रण तांई।।
बाजन लाग जुझारू बाजा। किहिस गर्जना असुर समाजा।।
द्रुत गति जात रणस्थल ओरी। हाहाकार मचाइ सबोरी।।
सावधान सुर रहेउ निहारत। आवत बूझि असुर ललकारत।।

शुकाचार्य रण थल पहुंचि, अवलोकिय खल लाश।
अन्तर उपजेउ क्रोध बड़, कीन्हेउ जियन प्रयास।।55।।

शुकाचार्य खल गुरु भृगुनन्दन। जानत विद्या मृत संजीवन।।
सो विद्या बल कीन प्रयोगा। व्यापु तुरत अदभुत संयोगा।।
करि मंत्रित जल सो छिड़कावा। मृत खल उठु जेस कोउ जगावा।।
गहि गहि आपु आप हथियारा। हेतू लड़न्ह तुरत ललकारा।।
गुरु विलोकि खल शीश नवाये। थका न दीखु लगत सुहताये।।
जानत यदपि समर प्रसंगा। पर आयसु मांगिय इक संगा।।
सेना शकति भाव सजगाई। अन्धक अवलोकत हरखाई।।
पाइ कृपा गुरु खल अनूकूला। भै रण उद्यत पाछिल भूला।।
मृत संजीवन बल प्रभुताई। नहि खल गात घात दुःखदाई।।
बीच सुरासुर मचु घमसाना। मारु मारु चहुं ओर सुनाना।।
दांव पेंच हथियारन के रे। एक दूज कहं मारहिं हेरे।।
होत असुर दल तनिक न पाछे। भै सुर थकित लड़त कसि काछे।।
जांनु मर्म नहि शिव सेनानी। हारत जानि समानि गलानी।।
करि बढ़ि बढ़ खल सेन प्रहारा। बोलत आपन गुरु जयकारा।।
जहं गुरु शकति कृपा अवतरहीं। होइ पार बाधा न परहीं।।
सुर दल हारे असुर प्रहारे। भागि जाइ शिव शरन पुकारे।।
जय जय काशीपति अखिलेश्वर। हर आसुरि वृत्ती सर्वेश्वर।।

शिव सन्मुख भाखन लगेउ, आपन बीती बात।
जीत हार दुइनव कहत, रह थर थर सुर गात।।56।।

सहित सुरन्ह शिवगण कर जोरे। बनि अधीर कह खल रण घोरे।।
आयसु नाथ करत जयकारा। जाइ समर करि असुर पछारा।।
अन्धक भाग प्राण लै आपन। लिहिस शरण शुकचार्य निवासन।।
पुनि आवा शुकचार्य समेता। तासु गुरू बड़ मंत्र प्रणेता।।
खल मुर्छित सो दीन्ह जियाई। लाग तासु बल गा अधिकाई।।
सम अन्धक अनगिन बलवाना। उठि उठि धाइ करिय घमसाना।।
शुक माया मंतर सविवेकू। सुरन्ह हमार न लग बल एकू।।
शुकेउ मंत्र बल खल बौराने। मारि कृपाण लगेउ सुर खाने।।
मचा चहूं अस हाहाकारा। मारि खांउ खल करिय पुकारा।।
हा हा बोलि असुर सेनानी। रटत मारु सुरता निबलानी।।
नाथ न लगु बल कुछ चतुराई। परु सोचन केस प्राण बचाई।।
भागब सूझ भागि हम आयन। जीति प्रथम पिछ हार दिखायन।।
जौ सहयोग कृपा मिलु अल्पा। लेब जीति अस दृढ़ संकल्पा।।

मोसम दूज चाह न कोऊ। शुक माया प्रभु हर विधि कोऊ।।
लोक असुरता देब संहारी। अंधक बल संताप निवारी।।

सुर अधीर देखिय विकल, बूझि दशा त्रिपुरारि।
सोचिय विधि बनु शुक हरण, तबहीं सुरन्ह उबारि।।57।।

हार सुरन्ह असुरन जबराई। सुनिय महेश मने दुःख लाई।।
अन्तर रोश नयन जल लाये। उबलु क्रोध शिव थामि न पाये।।
कर उठाय गरजेउ त्रिपुरारी। पुनि नन्दी सन वचन उचारी।।
नीक बेकार सोचु कछु नाही। लाउ पकरि शुक धावत जांही।।
जेहि विधि सुरगण रहहिं सुखारे। नन्दी सो करु बिना विचारे।।
जहं आयसु तहं कवन बिलम्बा। तुरत नमन करि शिव जगदम्बा।।
सहित कछुक गण नन्दि पयाने। चलु जेहि भांति पवन तूफाने।।
अवसर घड़ी पहर न लागे। नन्दी पहुंचि गयो चलि भागे।।
भृगुवंशी दीपक विद्वाना। शुक्राचार्य जहां विद्यमाना।।
चहुं दिश असुर सेन रखवारू। नाना अस्त्र शस्त्र संग धारू।।
पाउ विहग जहं नाहि प्रवेशन। सोह शुकासन ठांऊ ऐसन।।
जेहि गति नन्दि चलि गै आपन। कीन्ह न सो गति रोध निपातन।।
करत बाज जेस विहग शिकारा। सिंह करत जेस अज संहारा।।
तानुसार बल रोश जोशीला। लीन्ह धारि नन्दी बिन शीला।।
लांघे कूदि फांदि रखवारन। पहुंचे शुक आसन अगवारन।।
गहिय केश शुक लीन्ह उठाई। भांगि चले झोला शिशु नांई।।
हेगा होगा हाहा जब ले। खल हथियार संभारिय संभले।।
शुके केश गहि नन्दी भागे। भागत भयउ दूरि कछु आगे।।
धाइअ पाछ सेन बलवन्ता। पकरन नन्दी बढ़ेउ तुरन्ता।।
जेहि जेस वाहन ते तेस धावा। रखु न कसर सब जोर लगावा।।
फेकहिं अस्त्र शस्त्र विधि नाने। बढ़ी सेन खल शुकेउ छुड़ाने।।
बरसत मेघ जथा झरि लाई। तेस खल सेन बाण बरसाई।।
भवा न नन्दी पथ गति बाधा। भागत आइ गये पथ आधा।।
गहे केश दाबे भृगुनन्दन। नन्दी चलत करत शिव वन्दन।।
सिंहनाद गति पवन समाना। नन्दि नेराने शिव स्थाना।।
विफल सेन खल भयो निरासन। फिरेउ समर गै अंधक पासन।।
भागि अभय गति नन्दी देवा। पहुंचि गयो जहं रह महदेवा।।
उत खल सेन भेद नहि पावा। रह को जो लै भागि दुरावा।।

नन्दी वन्दत शंभु पद, सिरजा कर उपहार।
नाइ शीश कह लेहु प्रभु, आयसु जौन तुम्हार।।58।।

फल अनुहारे शंभु कर, नन्दी दीन्ह थमाइ।
ताहि नुसारेउ विश्वपति, मुख लीन्हेउ शुक डाइ।।59।।

जिन जाना देखा पहिचाना। जानि सका सो शिव मुख खाना।।
कारन करिय न वाद विवादा। तुरत पुरायहु नन्दी वादा।।
लीलेउ शिव सो आनन फानन। कीन पान रह विष जेहि आनन।।
लाग न शुक तन दशनाघात। जेस लुकाइ कोउ गृह पितु माता।।
विश्वरूप शंकर त्रिपुरारी। भोले नाथ सकल भय हारी।।
अजर अमर पशुपति तमहारी। ताहि पाइ को होइ दुखारी।।
पाउ न जासु दरस त्रय लोका। पद स्पर्श न बनु काहो का।।
मिलु जेहि तासु उदर स्थाना। कवन सुभागी ताहि समाना।।
यदपि ठांव मिलु पूरक मनसा। पर शुक शोक असुर संघरसा।।
खाइ कीश जेस बेर अंगूरा। कूचु न शिव लीलेउ शुक पूरा।।
भांति धरोहर धरि उर मांही। आसन बैठ मधुर मुसकाहीं।।
फिरु शिव उदर आपु मनमानी। लोक समान शुके चहुं छानी।।
सब देखत कुछ हाथ न आवत। जेस कोउ सपना हाल बतावत।।
रण देखत पर पहुंचि न पावत। योग मंत्र बल विफल जनावत।।
देखत सो जो दीखु न कबहूं। होत न ज्ञान भाव बिनु तबहूं।।
पाउ न अन्त विलोकत शूका। ढूढ़त निकसन द्वार चहूं का।।
जो अनन्त ता उदर अनन्ता। सकै पाइ केस खल गुरु अन्ता।।
बन्धक जीवन हित नहि आना। बूझि शूक बनु विकल महाना।।
फिरे चहूं दिशि पाइ न द्वारे। एक नाहि बहु बरस गुजारे।।
मायापति माया अनजानी। जांनु न शुक जब व्यापि थकानी।।
भा असूझ बल सकल हेराने। भयउ चूर गुरुता अभिमाने।।
आसन लाइ जपन्ह शिव लागे। स्वारथ मुकुति परम अनुरागे।।

इतइ बिना शुक सेन खल, विकल पाउ मन ह्रास।
चलत समर नाही बनत, भागन कै परयास।।60।।
करिय गरजना अंध के, सेना नेर बुलाइ।
कह रण तीरथ त्याग जो, आपु नरक गृह जाइ।।61।।
मरन भला न भागि के, रण करि मरब पुनीत।
समय कहत हम न निबल, सोचु हार न जीत।।62।।

यदपि असुर पति अन्धक बानी। सुनि बल पाइ असुर सेनानी।।
हटब न पाछ चरन धरि आगे। सेन लड़न्ह कह जाब न भागे।।
जेहि मारेन बहु बार पछारेन। ताते भागि जाब धिक्कारेन।।
वाणी बल अन्तर निबलाई। आइ असुर सेना अंगिराई।।

पशु बिन सींग हस्ति बिनु शुण्डा। विप्रवेद बिनु तन बिनु मुण्डा।।
नारि पुरुष बिनु फल बिनु तरुवर। बाण नोक बिनु धरम बिना धर।।
तानुसार बिन शुक खल सेना। विकल व्यथित रण भूमि फिरे ना।।
पर अंधक वाणी बल बूते। हेतु समर चलि भे खल पूते।।
लै गुरु नाम बाजि रण भेरी। खल दल घोर गर्जना टेरी।।
बाजन्ह लाग जुझारू बाजा। भिरेउ परस्पर दोउ समाजा।।
हाहाकार मचावत धाये। मारु मारु चहुं ओर सुनाये।।
जारन मारन विविध प्रकारन। होन लाग रण भल संहारन।।
नाना भांति करत आघाता। भुज उठाइ बोलहिं खल बाता।।
अब ल्या मारि बचइ न भागे। अवसर आजु परहिं जे आगे।।
समर कोलाहल घोर सुनाई। शुके श्रवन तक पीर अंटाई।।
शब्द नाद शुक करिय ओनावन। लहा न बल करि मंत्र पठावन।।
शुके समेत सेन खलताई। पर लगु पिछरन सुरन्ह लड़ाई।।
निकसन द्वार विलोकत शूका। छटपटात मारत पद मूका।।
बन्द जथा कोउ कारागारा। शूक दशा रह ता अनुहारा।।
करि वर बल रण कीन्ही खल दल। पर निर्बल भा बिना गुरु बल।।
घमासान रण सुरन्ह मचावा। वज्र त्रिशूल बाण बरसावा।।
मारत काटत करत प्रहारा। जात बढ़ा सुर दल इहि बारा।।
जरि मरि कटि कटि खल बिखराने। लड़त जोउ सो थकेउ चोटाने।।
मरन विलोकि बचा जेहि प्राना। सो भागे गै आपु ठिकाना।।
दशा निहारि शूक घबड़ाई। शिव उदरे थिर भे सिरनाई।।
काया छल बल विविध लगावत। अंधक लड़त भागि न पावत।।
शर बौछार देव दल मारे। अंधक आगु भयो अंधियारे।।
घायल गात गिरा भहराई। हाय हाय अंधक चिल्लाई।।
जयति शिवा शिव करत अलापन। सुरन्ह समूह मने आहलादन।।
असुर हार सुर विजय सुनावत। रण विराम नभ नाद गुंजावत।।

घायल अंधक केश गहि, लाउ सुरन्ह घिसियाइ।
सुर अरि प्रभु सन्मुख करिय, देइ त्रिशूल लटकाइ।।63।।
शिव त्रिशूल अन्धक टंगेउ, उदर बंधेउ शुकराज।
शान्ति सुखद अनुभूति भै, सुर दल लोक समाज।।64।।

सहित शिवा शिव विनय लगावत। हरखेउ सुर दल जय गुण गावत।।
काशी बासी चरण निहारी। भाखेउ सुर गण बात पिछारी।।
अपर महोदर आदिक बीरा। मरे समर महं सब रन धीरा।।
भट अतिकाय अकम्पन आदी। इहि समरे भै सब बरबादी।।

नाथ सकल निशिचर गै मारे। अब नहि व्यापइ खल व्यवहारे।।
व्यापइ जगत नाथ भगताई। बनै सुखी सब लोग लुगाई।।
जीवन आश्रम चार विचारा। बूझि सफल शिव लागु पियारा।।
समरे श्रम शक्ती सफलानी। शिवाचार व्रत चल अगवानी।।
देव समान देव व्रत धारी। हित मंगल जग जपु त्रिपुरारी।।
सब हित सब सुख सब मन चाहा। लगे करन सब कर्म उछाहा।।
लोक नुसार शंभु प्रभुताई। बनु वर्णाश्रम वर फलदाई।।
बनु जग जीवन युग परिवर्तन। शिव संधान लोक हित दर्शन।।
सुर मुनि मानव जेतिक काया। साधे आपु पाउ शिव दाया।।
शिव उद्देश्य लोक कल्याना। सो व्यापेउ सुर भूमि ठिकाना।।
शंभु विधाने जिय जग जेई। दुष्वृत्ति नाहि व्यापु मन तेई।।
आदि आज तक लोक प्रमाना। शिव शरने बिनु कौन महाना।।
जन शरनागत शंभु उबारा। करहिं नाहि अरि मीत विचारा।।

शिव शरनागत शूक बनि, सम अनाथ असहाय।
फंसि उदरे निशि दिन जपत, चरने ध्यान लगाय।।65।।

शूक विनय करि नाना भांती। लगेउ गुजारन निज दिन राती।।
उर तपसी तप थल बड़ पावन। लाग शूक तप शकति बढ़ावन।।
बसत जाहि मन भल गुरु ज्ञाना। बसइ कहूं पावइ वरदाना।।
अन्न नीर भव दोष विहीना। भै अवसर शुक तप लवलीना।।
काम क्रोध मद लोभ भिमाना। द्वेष ईर्ष्या तहं सुनसाना।।
लोक सम्पदा जित कल्यानी। तौन बयारि उदर सुखदानी।।
जेतिक सुख सुविधा जगमांही। वातवरण तेहि शूक समाहीं।।
पाइअ जाहि उभरु सुरताई। मनोभाव सो शूक उभाई।।
उदरे भल पर स्वर्ग नुहारा। शूक नुभूति पाउ प्रति वारा।।
सतत शूक तप बाढ़न्ह लागे। बल बुधि ज्ञान भगति अनुरागे।।
पावन्ह अजर अमर प्रभुताई। तप करि शूक लीन्ह जुहवाई।।
काल गाल परि निधन न पावा। विधि संयोग अदभुत सुख आवा।।
भाव आसुरी शूक दुराये। जप तप करि शिव मन हरखाये।।
शुक अन्तर कछु रहा न दोषा। भयउ समर्पित शंभु भरोसा।।
शूक पुकारत आरत बानी। निकसन चाह आपु मन सानी।।
तप विलोकि हरखे त्रिपुरारी। करि कृपा शुक विपति निवारी।।
शूक शुक्र सम शंकर माना। शुक्र पथे करि तेहि निकसाना।।
इतेउ मानि तेहि पूत समाना। सहित शिवा जेस लोक विधाना।।
शुक्र कीट जैसे जग प्राना। शूक जनम बनु ताहि समाना।।

शंकर शुक्र ज्योति अनुरूपा। पुनि सो उपजे शूक स्वरूपा।।
को सन्तति विलोकि न हरखे। आपन जानि कृपा न बरखे।।
कहं तपसी तप होत बेकारा। सब फल शूक पाउ इक ठारा।।

सहित शिवा शिव पूतगनि, कीन कृपा सब ढंग।
वर अजरामर दीन्ह तेहि, भूलि दोष रण रंग।।66।।

आपन्ह लाइ करइ जग प्रीती। सुर नर मुनि दानव मति रीती।।
शिव समेत सगरे पुर बासी। करि उत्सव घर आनन्दराशी।।
दानव देव लहत इकताई। जहं गुरु ज्ञान लोक सुखदाई।।
जेतिक धरम करम आचारा। बिनु शिवत्व नहि पर उपकारा।।
तेज ओज शुकरे महादेवा। शिवा स्नेह पाइ शुक देवा।।
लागे शिव घर जनम निबाहन। भांति गणेश पूत पद भावन।।
शुक्र नाम धरि लोक पुकारिय। पूत भांति तेहि उमा संवारिय।।
प्यार पुकार दुलार सदेहा। शूक मिलन लग देव सनेहा।।
भा शुक जीवन लोक पियारू। गयउ भूलि असुरन आचारू।।
जोरि हाथ शुक करत विनीता। छुटइ न प्रभु इहि शरण गहीता।।
तुम सम और दयालु न दानी। नाहिय मात पिता तुम खानी।।
आदि न अन्त तुम्हार दिखावत। आगम निगम पुराण बतावत।।
तुम अनन्त प्रभु अंग तुम्हारे। नयन श्रवन बल परम अपारे।।
होहि नाहि गणना कर चरने। रूप अगन अठ मूरति बरने।।
एक नाहि तुम विश्व रखावत। दिशि आठों जे त्रय पुर आवत।।
नीति तुम्हारि सुरासुर साधी। होहिं पुनीति न गनु अपराधी।।
नाथ करउं केहि विधि सेवकाई। बनत न विनय जांनु शरनाई।।
आगिल पाछिल चूक अनेकन। बन अनबन सब क्षमहु प्रत्येकन।।
शूक बूझि भव विपति निवारी। करिय विनय गनि पितु महतारी।।
मानि मनोगत शिव निरदेशा। लगेउ निभावन शूक हमेशा।।
बूझि शूक तेहि आपु हितेशा। रहहीं नन्दी संग विशेषा।।
पाछिल भूलि नीति असुराई। लगेउ बढ़ावन मति सुरताई।।

शूक बने शिव पूत जब, बदला लोक विधान।
होहिं नाहि उत्पन्न खल, आसुरि योनि हेरान।।67।।
देह दानवी लोप जौ, तो वृत्ति आसुरी बाढ़ि।
सबके अन्तर आज तक, रहइ सो सहजे ठाढ़ि।।68।।

भूलहिं जे शिव शिवा प्रभूता। वृत्ति आसुरी बनु ता पूता।।
तासु कुमति फल लह परिवारा। मिलहिं आजु लौं करत गुजारा।।
काशी बासी उदर निवासी। बनत शूक भागिय खलराशी।।

समाचार्य बनु शुक आचारा। गणन्ह संगे फिरु पुर चहुंवारा।।
भईं असुरता चहूं विरामा। बिन गुरु बूड़ दानवी कामा।।
उबरे शूक उबारेहु आना। जौ त्यागेउ असुराई बाना।।
शिव समान को पर उपकारी। दोषी देह सदेह उबारी।।
शंकर गण नन्दी अनुहारे। भयउ शूक भव परम पियारे।।
शिव कृपा शुक लोक निशानी। भई अमिट पाइअ सुखदानी।।
शंकर उदर बूझि प्रभुताई। विनवहिं शूक भाव शरनाई।।

काशी धरनी धाम पर, सोहत शिव दरबार।
लोक ताप संताप दुःख, होत तहां निपटार।।69।।
जौन समस्या जासु मन, अभय कहत सब ताहि।
सुखद न्याय कैलासपति, सब दुःख देत दहाहिं।।70।।
कौतूहल वश नन्दि गण, करिय शूक पर ध्यान।
मन आवा शंकर उदर, इन दुःख केसस दुरान।।71।।
विनय सरीखे भाव नम, बोले नन्दी राय।
कहउ शूक स्वामी उदर, केहि विधि रहेउ बिताय।।72।।

नन्दी बैन परम प्रिय लागा। सुनत शूक अन्तर सुख लागा।।
रवि शशि पाइ खिलइ कमलानी। शूक उछाह उपजु तेहि खानी।।
जोरि हाथ शंकर सिर नावा। सभा निहारि प्रनाम सुनावा।।
कहेउ पूंछु नन्दी तुम जोई। कथत हृदय बूड़त सुख सोई।।
होत मने भाखउं दिन राती। उदरे पिता बीत जेहि भांती।।
सो सुख भ्रात जाइ नहि बरना। सब सिद्धि पाउ होत स्मरना।।
वन्दत चरन उमा शिव काशी। नावत शीश शुकेश बकासी।।
परम मीत सख सुनु नन्देला। शंभु उदर हम बहु दिन खेला।।
जाइ न उदरे महिमा आंकी। पाउ दरस त्रय पुर सुख झांकी।।
भा मन जौन तौन तहं पावा। पुनि ऊपर ते तनय कहावा।।
वैभव सकल सुरासुर देखे। बैर विहीन स्वभाव विशेखे।।
राग न द्वेष नियंत्रण साथे। ज्ञान विज्ञान उदर जगनाथे।।
फिरहिं सिद्धियां परसन सिद्धी। दुखिया नाहि सबै मन निद्धी।।
तपस्थली उदरे अनुहारे। सुनु नन्दी तेस नहिं संसारे।।
सो थल पाइ कीन तप भारी। करि कृपा शिव दीन्ह उबारी।।
रहा लोक भय बाधा हीना। सुरता संग असुर बल चीना।।
सका आप जीवन पहिचानी। सकउं न शिव उर कथा बखानी।।
मृत्यु अभय जीवन सुखकारी। मंत्र मृत्युंजय बन्धन हारी।।
विधि विधान करि शूक बतावन। सुनु जे बनु ता शकति बढ़ावन।।

भगति भाव वरनन करि, शूक मंत्र जोउ जाप।
बन्धन मुक्ती पाइ फल, जानिय शिव प्रताप।।73।।

नमस्ते देवेशाय सुरासुरनमस्कृताय।
भूतभव्यमहादेवाय हरितपिंगल लोचनाय।
बलाय बुद्धिरूपिणे वैयाघ्रवसनच्छदायारणेयाय।
त्रैलोक्यप्रभवे ईश्वराय हराय हरिनेत्राय।
युगान्तकरणायानलाय गणेशाय लोकपालाय।
महाभुजाय महाहस्ताय शूलिने महादष्ट्रिणे।
कालाय महेश्वराय अव्ययाय कालरूपिणे।
नीलग्रीवाय महोदराय गणाध्यक्षाय सर्वात्मने।
सर्वभावनाय सर्वगाय मृत्युहन्त्रे पारियात्रसुव्रताय।
ब्रह्मचारिणे वेदान्तगाय तपोऽन्तगाय।
पशुपतये व्यंगाय शूलपाणये वृषकेतवे हरये।
जटिने शिखण्डिने लकुटिने महायशसे भूतेश्वराय।
गुहावासिने वीणापणवतालवते अमराय।
दर्शनीयाय बालसूर्यनिभाय श्मशानवासिने।
भगवते उमापतये अरिंदमाय भगस्याक्षिपातिने।
पूष्णो दशननाशनाय क्रूरकर्तकाय।
पाशहस्ताय प्रलयकालाय उल्कामुखाग्निकेतवे।
मुनये दीप्ताय विशाम्पतये उन्नयते।
जनकाय चतुर्थकाय लोकसत्तमाय वामदेवाय।
वाग् दाक्षिण्याय वामतो भिक्षवे भिक्षुरूपिणे।
जटिने स्वयं जटिलाय शक्रहस्तप्रतिस्तम्भकाय।
वसूनां स्तम्भकाय क्रतवे क्रतुकराय कालाय।
मेधाविने मधुकराय चलाय वानस्पत्याय।
वाजसनेतिसमाश्रम पूजिताय जगद्धात्रे जगत्कर्त्रे।
पुरुषाय शाश्वताय ध्रुवाय धर्माध्यक्षाय त्रिवर्त्मने।
भूत भावनाय त्रिनेत्रायबहुरूपाय सूर्यायुतसमप्रभाय।
देवाय सर्वतूर्यनिनादिने सर्वबाधाविमोचनाय ।
बन्धनाय सर्वधारिणे धर्मोत्तमाय।
पुष्पदन्तायाविभागाय मुखाय सर्वहराय।
हिरण्यश्रवसे द्वारिणे भीमाय भीमपराक्रमाय।
नमो नमः नमः शिवाय।।

ब्रह्म लोक शंकर उदर, सुर सुख सर्वाधार।
जग जानिस शुक हेतु सो, कारागार प्रकार।।74।।
रहा न काटे कटि सकत, तूरब संभव नाहि।
ताते मुक्ती शूक लेइ, मंत्र मृत्युंजय गाहि।।75।।
युक्ति मुक्ति तप मंत्र संग, हमहुं साधना कीन।
फल प्रत्यक्ष प्रमाण दइ, गाइ प्रगट करि दीन।।76।।
धन्य धन्य शंकर उदर, बड़ महिमा प्रभुताइ।
भले जनम दूसर बनेउ, पाछिल भूलेउ नाइ।।77।।
काशी महिमा काशिपति, शूक गाइ उभराइ।
तेहि धरनी जन मन बसे, सहज मुक्ति मिल जाइ।।78।।

मंत्र मृत्युजय परु जेहि काना। बाढ़हि भगति घटइ अभिमाना।।
वृत्ति आसुरी जाइ दुराई। होइ असुर करु शिव भगताई।।
शिव पद कमल शीश सब नावत। देखि शिवा शिव बड़ सुख पावत।।
कृपा दृष्टि शिव लोक निहारत। दीन दयाल असुर तन तारत।।
जिन जाना काशी सो धायउ। अन्तर शठता भाव भुलायउ।।
बदला माथा जातुधान का। नीति समर बल हरन आन का।।
आप उबरि शुक आन उबारे। घटा न गुरुता बल संस्कारे।।
घर पुर नगर धरा सुख सोई। व्यापा जौन मने शिव होई।।
शंकर नीति निधान संवारन। पावा शूक नाम अगुवारन।।
बाढ़ी धरनि देव प्रभुताई। जौ शिव मूल गृहस्थ शोधाई।।
लावहिं युग जो जन अवतारी। युग सो शिव देइ गृही सुधारी।।
शूक मंत्र मति सब मन भावा। नन्दी तलक आपु मुख गावा।।
काशीपति शंकर त्रिपुरारी। जब तब विचरहिं पुर चहुंवारी।।
नन्दी शूक आदि गण संगा। पुर विलोकि पहुंचइ तट गंगा।।
सुनहीं नगर समस्या काने। नाशहि पीर उचित समधाने।।
इहि विधि करत विगत बहु साला। पुरजन मुदित समेत दयाला।।
दिवस एक शिव कारागारे। शिव नन्दी शुक संग पधारे।।
दुःख दुर्गति दण्डित अपराधी। कर्म नुसार रहे तहं साधी।।
रह तामें अन्धक दुःख ढेरा। लटका शूल भवा बड़ बेरा।।
दीन दशा जीवित कृश काया। लागत आश राखु प्रभु दाया।।
वन्दत सम तपसी दिनराती। जेस बुधि बल अन्धक औकाती।।
दीनदयाल गयो तेहि ठाने। उबरन अवसर तासु नेराने।।
ताहि विलोकि दयाल दरद भै। जे संग ता मुख तासु वरद भै।।
विनवत अंधक विविध प्रकारा। तजि खल भाव देव अनुहारा।।

मन्द नाद मुख ते करि गावन। आप करिय शिव ताहि ओनावन।।
अन्धक दीनदशा अवलोकी। लागि दया शिव सकेउ न रोकी।।

आनन श्वांसे ताहि मिलु, वन्दन कृपानिधान।
क्षीण काय तपसी समे, भाव भगति प्रमान।।79।।
नाम आठ शत शंभु के, वन्दत बारमबार।
देह विवश पर नैन जल, ते करि नमन हजार।।80।।

महादेवं विरूपाक्षं चन्द्रार्धकृत शेखरम्।
अमृतं शाश्वतं स्थाणुं नीलकण्ठं पिनाकिनम्।।
वृषभाक्षं महाज्ञेयं पूरुषं सर्वकामदम्।
कामारि कामदहनं कामरूपं कपर्दिनम्।।
विरूपं गिरिशं भीमं सृक्किणं रक्तवाससम्।
योगिनं कालदहनं त्रिपुरघ्नं कपालिनम्।।
गूढव्रतं गुप्तमंत्रं गम्भीरं भावगोचरम्।
अणिमादिगुणाधारं त्रिलोकैश्वर्यदायकम्।।
वीरं वीरहणं घोरं विरूपं मांसलंपटुम्।
महामांसादमुन्मत्तं भैरवं वै महेश्वरम्।।
त्रैलोक्यद्रावणं लुब्धं लुब्धकं यज्ञसूदनम्।
कृत्तिकानां सुतैर्युक्तमुन्मत्तं कृत्तिवाससम्।।
गजकृत्तिपरीधामं क्षुब्धं भुजंगभूषणम्।
दत्तालम्बं च वेतालं घोरं शाकिनिपूजितम्।।
अघोरं घोरदैत्यघ्नं घोरघोषं वनस्पतिम्।
भस्मांगं जटिलं शुद्धं भेरुण्डशतसेवितम्।।
भूतेश्वरं भूतनाथं पंचभूताश्रियं खगम्।
क्रोधितं निष्ठुरं चण्डं चण्डीशं चण्डिकाप्रियम्।।
चण्डतुण्डं गरुन्मन्तं निस्त्रिंशं शवभोजनम्।
लेलिहानं महारौद्रं मृत्युं मृत्योरगोचरम्।।
मृत्योर्मृत्यु महासेनं श्मशानारण्यवासिनम्।
रागं विराजं रागान्धं वीतरागं शतार्चिषम्।।
सत्वं रजस्तमोधर्ममधर्मं वासवानुजम्।
सत्यं त्वसत्यं सद्रूपमसद्रूपमहेतुकम्।।
अर्धनारीश्वरं भानुं भानुकोटिशतप्रभम्।
यज्ञं यज्ञपतिं रुद्रमीशानं वरदं शिवम्।।
अष्टोत्तरशतं ह्येतन्मूर्तीनां परमात्मनः।
शिवस्य दानवो ध्यायन् मुक्तस्तस्मान्महाभयात्।।

मंत्र मृत्युंजय शूक जपि, जेस भै बन्धन मुक्त।
तथ अन्धक जपु नाम शत, भा शिव कृपा युक्त।।81।।
यदपि अघी अंधक रहा, जप तप साधक देह।
अवलोकत शिव मुद बनेउ, अन्तर उपजु सनेह।।82।।
शिव सन्मुख शुक पीछ रह, नन्दी बगल सुहात।
तन लटका आरत बैन, देखि न शिव सहि जात।।83।।
तुरत जटाधारी प्रभु, आपन हाथ बढ़ाइ।
लेइ उतारि त्रिशूल ते, कर सुख ताहि थमाइ।।84।।
कर परसत विश्वनाथ के, आपन जप तप ध्यान।
दिव्य देह अंधक बनेउ, पुनि करि स्तुति गान।।85।।

कृत्स्नस्य योऽस्य जगतः सचराचरस्य,
कर्ता कृतस्य च तथा सुखदुःखहेतुः।
संहारहेतुरपि यः पुनरन्तकाले,
तं शंकरं शरणदं शरणं व्रजामि।।1।।
यं योगिनो विगतमोहतमोरजस्का,
भक्त्यैकतानमनसो विनिवृत्तकामाः।
ध्यायन्ति निश्चलधियोऽमितदिव्यभावं,
तं शंकरं शरणदं शरणं व्रजामि।।2।।
यश्चेन्दुखण्डममलं विलसन्मयूखं,
बद्ध्वा सदा प्रियतमां शिरसा बिभर्ति।
यश्चार्धदेहमददाद् गिरिराजपुत्र्यै,
तं शंकरं शरणदं शरणं व्रजामि।।3।।
योऽयं सकृद्विमलचारुविलोलतोयां,
गंगा महोर्मिविषमां गगनात् पतन्तीम्।
मूर्ध्नाऽऽददे स्रजमिव प्रतिलोलपुष्पां,
तं शंकरं शरणदं शरणं व्रजामि।।4।।
कैलाशशैलशिखरं प्रतिकम्प्यमानं,
कैलाशश्रृंगसदृशेन दशाननेन।
यः पादपद्मपरिवादनमादधानस्तं
शंकरं शरणदं शरणं व्रजामि।।5।।
येनासकृद् दितिसुताः समरे निरस्ता,
विद्याधरोरगगणाश्च वरैः समग्राः।
संयोजिता मुनिवराः फलमूलभक्षास्तं
शंकरं शरणदं शरणं व्रजामि।।6।।

दग्ध्वाध्वरं च नयने च तथा भगस्य,
पूष्णस्तथा दशनपंक्तिमपातयच्च।
तस्तम्भ यः कुलिशयुक्तमहेन्द्रहस्तं,
तं शंकरं शरणदं शरणं व्रजामि।।7।।
एनस्कृतोऽपि विषयेष्वपि सक्तभावा,
ज्ञानान्वयश्रुतगुणैरपि नैव युक्ताः।
यं संश्रिताः सुखभुजः पुरुषाभवन्ति,
तं शंकरं शरणदं शरणं व्रजामि।।8।।
अत्रिप्रसूतिरविकोटि समानतेजाः,
संत्रासनं विबुधदानवसत्तमानाम्।
यः कालकूटमपिवत् समुदीर्णवेगं,
तं शंकरं शरणदं शरणं व्रजामि।।9।।
ब्रह्मेन्द्ररुद्रमरुतां च सषण्मुखानां,
योऽदाद् वरांश्च बहुशो भगवान् महेशः।
नन्दिं च मृत्युवदनात् पुनरुज्जहार,
तं शंकरं शरणदं शरणं व्रजामि।।10।।
आराधियः सुतपसा हिमवन्तिकुंजे,
धूम्रव्रतेन मनसाऽपि परैरगम्यः।
संजीवनी समददाद् भृगवे महात्मा,
तं शंकरं शरणदं शरणं व्रजामि।।11।।
नानाविधैर्गजबिडाल समानवक्त्रै
र्दक्षाध्वरप्रमथनैर्वलिभिर्गणौघैः।
योऽभ्यर्च्यतेऽमरगणैश्च सलोकपालैस्तं
शंकरं शरणदं शरणं व्रजामि।।12।।
क्रीडार्थमेव भगवान् भुवनानि सप्त,
नानानदीविहगपादपमण्डितानि।
सब्रह्मकानि व्यसृजत सुकृताहितानि,
तं शंकरं शरणदं शरणं व्रजामि।।13।।
यस्याखिलं जगदिदं वशवर्ति नित्यं,
योऽष्टाभिरेव तनुभिर्भुवनानि भुङ्क्ते।
यः कारणं सुमहतामपि कारणानां,
तं शंकरं शरणदं शरणं व्रजामि।।14।।
शंखेन्दुकुन्दधवलं वृषभप्रवीर,
मारुह्य यः क्षितिधरेन्द्र सुतानुयायात्।
यात्यम्बरे हिमविभूतिविभूषितांगस्तं,
शंकरं शरणदं शरणं व्रजामि।।15।।

शान्तं मुर्निं यमनियोगपरायणं तै भमैर्यमस्य,
पु रुषैः प्र ति नी य मा न म् ।
भक्त्या नतं स्तुतिपरं प्रसभं सूसूक्ष्मं,
तं शंकरं शरणदं शरणं व्रजामि।।16।।
यः सव्यपाणिकमलाग्रनखेन देवस्तत्
पंचमं प्रसभमेव पुरः सुराणाम्।
ब्राह्मं शिरस्तरुणपद्मनिभं चकर्त,
तं शंकरं शरणदं शरणं व्रजामि।।17।।
यस्य प्रणम्य चरणौवरदस्य भक्त्या,
स्तुत्वा च वाग्भिरमलाभिरतन्द्रिताभिः।
दीप्तैस्तमांसि नुदते स्वकरैर्विवस्वांस्तं
शंकरं शरणदं शरणं व्रजामि।।18।।

घुटना टेके नाइ सिर, दीन दशा दरसाइ।
जोरि हाथ श्रद्धा सजल, बहु विधि स्तुति गाइ।।86।।
आश लाइ हर हरखहीं, भूलहि दोष हमार।
तन मन थिर नाहीं मिलत, पांव परत बहु बार।।87।।
भाव भगति अन्तर दशा, शरणागत व्यवहार।
बूझि कृपानिधि बैन कह, धरु मन धीर विचार।।88।।

जेस बूड़त कोउ पाउ सहारा। बनेउ महेश्वर ता अनुसारा।।
तजि अनुशासन रुख आश्वासन। कर उठाइ कीन्ही शिव भाखन।।
विश्वनाथ प्रभु दीनदयाला। करि न बिलम्ब कहिअ ततकाला।।
सुनु खलपति अंधक बलवाना। सम तपसी कीन्हे तुम ध्याना।।
जेस तप करि तुम समय गुजारे। आश हमारि न आन निहारे।।
संयम नियम सहत तन पीरा। साधक भांति बिना अन नीरा।।
व्रत आराधन तुमहिं समाना। दीखहुं नाहि संभारत आना।।
मांगु मांगु वर चाह नुसारे। देब सबै न करब इनकारे।।
धरु मन धीर न होउ अधीरा। पीर तुम्हारि देइ मोहि पीरा।।
सुनि शिव वचन आप अनुकूले। अंधक मुदित परम सुख फूले।।
जोरि पानि पद शीश लगाइअ। मांगु न वर वरु भूल सुनाइअ।।
नाथ न चीन्हि पाउ प्रभुताई। कीन जौन सो मोहि सताई।।
दीखु न तुम सम दीनदयाला। दोषी दोष निवारन वाला।।
अन्तर बाहर मोर दुखारी। जो रण रांचि मचाइअ रारी।।

न मोहि हार भये का लाजा। लाज ढेरि लखि किरपा काजा।।
प्रभु जो कीन्ह मूढ़ता कारन। चाह येहि सो करउ बिसारन।।
अहउं दुःखी जाहीं दुःख कैसे। कीन्ह भूल पाछिल दिन जैसे।।
भूलहु हम तुम देहु भुलाई। नाथ न सूझत दूज उपाई।।
बिनु अस सफल न पश्चातापा। त्याग तपस्या जो मुख जापा।।
समझउं गिरिजा निज महतारी। दोष न रह जो अभल निहारी।।
जान अजान भूल करु अन्ता। इहि सम बड़ वर को भगवन्ता।।
दीन जानि शरणागत दासा। पुरवहु नाथ मनो अभिलासा।।
नाहि अवर कछु आगिल मांगन। चाहत पाछिल भूल निपातन।।
जथा व्यथा मुक्ती कर दीन्ही। तथ हति दोष लेहु दुःख छीनी।।
जौ न भुलावहु दोष हमारे। तौहम जांनु लदा अघ भारे।।
नहि अब भावत पाप पतंगा। जौ मिलु शरण नाथ पद संगा।।
जौ मन चाह भगति भगवाना। दोष तनिक लगु शैल समाना।।
चन्द्र किरण अस देहु विचारे। छूटु नाहि अब प्रभु पद द्वारे।।
देव बैर स्मरण न होई। तीन नयन छबि रहउं संजोई।।
जो जो अवगुण होहिं हमारे। तुम जग जानइ देहु सो जारे।।
अस कहि चरन गिरा भहराई। उठेउ नाहि शिव आप उठाई।।

पूत भांति सहराइ शिव, प्यार परोसत संग।
दिव्य देह मन मति करिय, करत दोष दुख भंग।।89।।
गोदी प्यार सनेह सुख, देहिं जाहि त्रिपुरार।
ता समताई कवन जग, गुण गावत संसार।।90।।
कृपासिन्धु दुःख दोष हर, दीनबन्धु भगवान।
शरणागत पर करि कृपा, जानत पूत समान।।91।।

दुःख ते बड़ सुख अंधक पावा। परम मुदित शिव पूत कहावा।।
उपजु तासु उर शकति विशेखा। जौ शिव ताहि कृपा करि देखा।।
पूरण भै अंधक अभिलासा। जौ करि भगति बैठ शिव पासा।।
गण पद पाइ परम सतकारे। शुक समेत नन्दी जयकारे।।
पावत नाहि किहे रण जोऊ। राखि भगति पावा सुख वोऊ।।
धन्य धन्य शंकर त्रिपुरारी। खल नाशन विधि जग निरमारी।।
लौकिक खलता कीन समापन। बलेउ वर्ण आश्रम स्थापन।।
काशी महिमा जाइ न जोखी। सद बुधि गहि चलहीं जहं दोखी।।
काशी वास वायु जल नीरा। करइ निपातन भव दुःख पीरा।।
मंत्र मृत्युंजय जापइ जोई। उमा महेश लगै प्रिय सोई।।
पूत स्वरूप सो गण अनुहारे। काल डेराइ न आउ दुवारे।।

देव दनुज सुर नर अवतारी।। शिव महिमा सब मुखे उचारी।।
आदि न अन्त जनम नहि मरना। तासु कथा जावइ केस बरना।।
नेति नेति श्रुति ताहि बतावा। मति अनुसार लोक जन गावा।।
शिव समान को जग हितकारी। देहीं ऊंच नीच सब तारी।।
जग भल जो रहु भलता काजू। बसहिं नेर तेहि देव समाजू।।
देव जहां दुख नेर न आवत। आगम निगम पुराण बतावत।।
बाढ़इ सकल उपजु सुख नाना। जग जो करहिं महेश्वर ध्याना।।

काशीपति काशी नगर, मनसा पूरक धाम।
लोक लोग लागे कहन्ह, शिव जय आठों याम।।92।।
सबै सुखी सब स्वस्थ भै, शंभु नियम मति पालि।
सुरताई शासन उभरु, नीति आसुरी टालि।।93।।

शिव कल्याण रूप भवकूपा। जग कल्याण करहिं बहु रूपा।।
देव महेश्वर बनि सर्वेश्वर। काशीपति विश्वनाथ विश्वेश्वर।।
वृषभेश्वर अत्रीश्वर बन के। काशी बसहिं ठांव सब चल के।।
कहुं असुरेश्वर कहूं महेश्वर। नाम विदित भा शिव लिंगेश्वर।।
दाता दीन लोक सुख दाता। जग जन भजहिं मानि पितु माता।।
देव दनुज सब भयउ सुखारे। गये शरण काशीपति द्वारे।।
शूक विलोकिय शिव प्रभुताई। मातु उमा शकती महिमाई।।
काशी राज काज व्यवहारा। दीखु व्यवस्थित भांति प्रकारा।।
नाना लिंग नाम स्थाना। सबते सुलभ लोक जन माना।।
अंधक आदि असुर अनगीना। लह मुक्ती काशी फल चीना।।
विविध भांति काशी सेवकाई। हेतू आवहिं लोग लुगाई।।
शुक्र गनहिं शिव ईश समाना। शिव पद सेवहिं शास्त्र विधाना।।
जागी भगति महेश भवानी। थापन शुक्रेश्वर मन ठानी।।
शिव कृपा प्रेरन मन आवा। शुक्रेश्वर शिव लोक सुहावा।।
जनम जगत मंगल जेहि करनी। देहुं थापि सो काशी धरनी।।
आपु तरहिं तारहिं परिवारा। चलु शिव शासन जेहि आधारा।।
युग युग लाभ पाउ जन सोई। सिरजे शुक्रेश्वर बल जोई।।
अस मन नीति शूक मति व्यापे। जानत आप महेश प्रतापे।।
हेतु लोक हित नीति नरेशा। दइ शुक पूजन विधि उपदेशा।।
धरा पुनीते तीरे गंगा। शुक थापिय शुक्रेश्वर लिंगा।।
सन्मुख विरचिय कूप नवीना। मानि वास शिव ज्योति प्रवीना।।
शिव शुक्रेश्वर पुर विश्वनाथे। पूजन शूक करहि विधि साथे।।
संयम नियम धरम धन धारे। चन्दन पुष्प धूप अगरारे।।

करहिं समर्पित सो उपहारा। बढ़ु जेहि ते ब्रह्मचर्य विचारा।।
वन्दन विनय स्तवन ध्याना। सहस नाम शिव करत जपाना।।
विकसइ शुक्र ज्योति जग जैसे। शुक्रेश्वर पूजत शुक वैसे।।
भाव भावना मन चित पावन। राखि शूक तप करहि निभावन।।
तन यज्ञीय समर्पित जीवन। भांति शूक रखि गै तपसी बन।।

देखि घोर तप शूक के, बीतत बरस हजार।
शुक्रेश्वर सिद्धि दियन, करन भला संसार।।94।।
लिंग फारि प्रगट भयो, शुक्रेश्वर भगवान।
कोटि भानु सम ज्योति लै, शंकर कृपानिधान।।95।।
लिंग नाथ शुक्रेश पति, उमानाथ विश्वनाथ।
भृगुनन्दन ते वैन कह, आशिष रूपी हाथ।।96।।
परम तपोनिधि मुनि महा, काज विचार तुम्हार।
लोक हितारथ जानि भल, लीन इहां अवतार।।97।।

जो विधि रचत आन हित हेता। सो पियार कह कृपानिकेता।।
देहुं दान तेहि निज प्रभुताई। मन मांगा वरदान थमाई।।
जहां भगति मम रक्षण शूकर। करु सब देव कृपा ता ऊपर।।
सुनिय भार्गव वचन महेशा। मोद अपार दुरान क्लेशा।।
छबि शुक्रेश परम अदभूता। आनन आठ ज्योति सुखरूपा।।
लगत मनोहर प्रीति निहारन। अन्तर लागत बल अवतारन।।
पुलके रोम नयन सजलाने। शूक मोद न रहा ठेकाने।।
शूक शुकेश्वर रूप निहारी। करहीं बार बार जयकारी।।
चरन नमन करि आपु लेट के। परु सुख सिन्धु शुकेश देख के।।
सो सुख शूक समात न गाते। नयन निहारि रूप मुख बाते।।
मूरति बनै जहां तन चेतन। निः सन्देह सो ईश निकेतन।।

शुक्रेश्वर भगवान पद, शूक लगाइअ माथ।
विविध भांति स्तुति करिय, जोरे दोनों हाथ।।98।।

त्वं भाभिराभिरभिभूय तमस्समस्त
मस्तंनयस्यभिमतानि निशाचराणाम्।
देदीप्यसे दिवमणे गगने हिताय,
लोकत्रयस्य जगदीश्वर तन्नमस्ते।।1।।

लोकेऽतिवेलमतिवेल महामहोभि
निर्भासि कौ च गगनेऽखिललोकनेत्रः।
विद्राविताखिलतमास्सुतमो हिमांशो,
पीयूषपूरपरिपूरित तन्नमस्ते।।2।।
त्वं पावने पथि सदा गतिरस्युपास्यः,
कस्त्वां बिनाभुवनजीवन जीवतीह।
स्तब्धप्रभंजनविवर्धितसर्वजन्तो,
संतोषिताहिकुल सर्वग वैनमस्ते।।3।।
विश्वैक पावक नतावक पावकैक,
शक्तेर्ऋते मृतदिव्यकार्यम्।
प्राणिष्यदो जगदहो जगदन्तरात्मंस्त्वं,
पावकः प्रतिपदं शमदो नमस्ते।।4।।
पानीयरूप परमेश जगत्पवित्र,
चित्रातिचित्रसुचरित्रकरोऽसि नूनम्।
विश्वं पवित्रममलं किल विश्वनाथ,
पानीयगाहनत एतदतो नतोऽस्मि।।5।।
आकाश रूप बहिरन्तरुतावकाश,
दानाद् विकस्वरमिहेश्वर विश्वमेतत्।
त्वत्तस्सदा सदय संश्वसिति स्वभावात्,
संकोचमेति भवतोऽस्मि नतस्ततस्त्वाम्।।6।।
विश्वम्भरात्मक विभर्षि विभोऽत्र विश्वं,
को विश्वनाथ भवतोऽन्यतमस्तमोऽरिः।
स त्वं विनाशय तमो मम चाहिभूष,
स्तव्यात् परः परतरं प्रणतस्ततस्त्वाम्।।7।।
आत्मस्वरूप तव रूपपरम्पराभि,
राभिस्ततं हर चराचररूपमेतत्।
सर्वात्मरात्मनिलय प्रतिरूपरूप,
नित्यं नतोऽस्मि परमात्मजनोऽष्टमूर्ते।।8।।
इत्यष्टमूर्तिभिरिमाभिरभिन्नबन्धो,
युक्तः करोषि खलु विश्वजनीनमूर्ते।
एतत्ततं सुविततं प्रणतप्रणति,
सर्वार्थसार्थपरमार्थ ततो नतोऽस्मि।।9।।

चरन नमत वन्दन करत, अष्टमूर्ति अवतार।
पंच तत्व क्रतु भानु शशि, ये सग रूप तुम्हार।।99।।
नाम शर्व भव रुद्र उग्र, पशुपति रूप समेत।
महादेव ईशान बल, शक्ति चेतना देत।।100।।

वन्दन अष्टमूर्ति अवतारी। शक्ती आठ नाम शिव धारी।।
भृगुनन्दन ठाढ़े तेहि छाया। मानि सफल जीवन तन काया।।

उमड़िय श्रद्धा चरन धरि माथा। उठन्ह न चाह उठेउ शिव हाथा।।
ज्योति विलोकत नयन निमेषे। दीन स्वरूपे भगति विशेषे।।
तेज ओज आपन्ह प्रभुताई। शूक गात शुक्रेश समाई।।
जेस हनुमान राम प्रीताई। संग शूक शिव लग इहि ठांई।।
तपसी परम तनय सम जानी। बोले वाणी औढरदानी।।
करि उर बास संजीवनि पावा। ताते सकु तन मृतक जिलावा।।
शुक्र सनेह थापि शुक्रेशा। पूजन साधन साधि विशेषा।।
जेहि ते बनै प्राण प्रभुताई। देखि भगति सो रूप बनाई।।
शुक्र रूप मम बीज स्वरूपा। तन सो धरि लै अठ दिसि धूपा।।
ताहि स्वरूप करहिं जे ध्याना। लहहिं शकति सुर बनै महाना।।
इहि सम दूज न रूप हमारो। रहि विलीन एही ते तारों।।
पूत पिता सम होवहिं बाता। अष्टमूर्ति नाशक भव त्राता।।
शूक ओनात वचन शुक्रेशा। सिद्धि विशेष दीन्ह अखिलेशा।।
जग कल्याण उद्देश्य तुम्हारू। कह महेश सो मोहि पियारू।।
जो जग देत मिलत पुनि सोई। जगत रीति विधना अस बोई।।
इहि विधान जे नाहि सुहावा। आपु तेज सो आपु नशावा।।
होहु शूक करि शुक साकारा। महिमा लिंग लोक उद्गारा।।
सृष्टी शुक्र लिंग बल नाता। जेस महिमामय कीन विधाता।।
सो कीन्ही तुम लोक उजागर। मांनु जथा जग गागर सागर।।
जाइ न युग युग मान तुम्हारे। जब तक शुक्र रहहि संसारे।।
तारा रूप धरे नभ चारी। दीखु लोक समता दिनचारी।।
जहां भांनु शशि काज न लागे। रहइ तुम्हार तहां अनुरागे।।
बिन शुक उदय न चल भल काजू। भय तुम्हारि रखु लोक समाजू।।
जौ तुम दृष्टि ज्योति भू हीना। अवसर ताहि ब्याह जे कीना।।
बाढ़ै कुमति मिलै असुराई। उपजै सन्तति गृह दुखदाई।।
पावै शुक्र हीनता रोगा। नहि रह जब लों भव शुक योगा।।
काज सफल भल शूक सबूते। कह शुक्रेश देहुं वर पूते।।

शुक्रवार शुक कूप जल, करि पूजन शुक्रेश।
तासु कामना बनु सफल, निकसे मुखे महेश।।101।।

इहि विधि शूक बनेउ वरदानी। पुनि शुकेश कह आगिल बानी।।
सदाचार आहार विहारे। मोहि पूजि जे शुक्र तन धारे।।
सो तन पाउ देव प्रभुताई। प्रभुता शुक्र न दृष्टि दिखाई।।
सुख सौभाग्य पूत धन धर्मा। बाढ़ै सकल सधइ सत कर्मा।।
बुधि विद्या परिवार सुचारी। बनै लहै वर युग अवतारी।।

मंत्र मृत्युंजय माला फेरे। राज नीति बल पाउ घनेरे।।
जेहि पूजन भावै शुक्रेशा। पाउ मुकुति न कुछ सुख शेषा।।
दइ शुक्रेश्वर इत वरदाना। लिंग समाने कृपानिधाना।।
सो ज्योतिर्मय छबि अदभूता। नयन बसाइ लीन्ह भृगु पूता।।
जयति स्वरन पुर गगन गुजांवा। महिमा काशी धाम बढ़ावा।।
जहां उमा शंकर घर द्वारा। शुक्रेश्वर महिमा संचारा।।
विविध भांति शंकर सेवकाई। शूक भांति वसुधा जन गाई।।

शिव स्तुति अनुपम विमल, जग पूजत शिव लिंग।
ता महिमा को गनि सकै, प्रगटत शिव तिय संग।।102।।
भाव राखु सो ठाढ़ नभ, आवत देन अशीश।
श्रद्धा शकति पावन जहं, होत प्रगट जगदीश।।103।।

शिव पूजा विधि विविध प्रकारा। गुण महिमा गनु अगम अपारा।।
मूढ़ महा मैं कलिगुण धारी। का बरनौं महिमा त्रिपुरारी।।
अन्तर नाहि उभरु भगताई। बसइ जहां अवगुण कपटाई।।
महादेव शिव कृपानिकेता। मैं सुमिरउं सुत नारि समेता।।
सत शिव रूप शिवा उर शकती। जौ अस भाउ उभरु मन भगती।।
जहां सत्य सद भाव बसेरा। सो तन मन गनु शंकर चेरा।।
सत्य समान भगति न दूजी। भगति समान न पूजा पूजी।।
जौ चाहा पूजा विधि जानन। गहउ भगत पद शास्त्र पुरानन।।
शिव इच्छा अदभुत अनुरूपा। सहजे गढ़हि रंक तन भूपा।।
महिमा जासु जाइ नहि जानी। वरना कुछ विधि शेष भवानी।।
शिव कोपे गनु होन संहारन। इहि ते जगत जीव करि धारन।।
आपु भाव शिव आपुहि जानै। औढर अडबंगी जग मानै।।
भाखु जगत शिव कृपा अनन्ता। देहीं सुख करहीं दुःख अन्ता।।
शंकर व्रत निभाहइ जोई। जानहु मुक्ती बीज सो बोई।।
भोग मोक्ष इच्छा फलदाई। साधन धर्म हेतु जग तांई।।
सुर मुनि सन्त दनुज नर नारी। एक भाव शिव सबै निहारी।।
नाथ नमामि नमामि अनामय। व्रत बलवर्धक देव दयामय।।
काम आदि अघमय अपराधा। बसइ न मन आवइ न बाधा।।
मन्दिर तीरथ शिव घर अन्दर। भावइ मोहू रैन दिवस भर।।
बीतइ जनम नाथ भगताई। गावत गुण शकती जग माई।।
चारि वरण जन वक्ता ज्ञानी। शास्त्र कुशल वेदज्ञ बखानी।।
रवि शशि ब्रह्म उपासक जोऊ। वैष्णव शैव धर्म जन कोऊ।।
शिष्ट विशिष्ट पुरुष जन नारी। सबै शिवा शिव आयसु कारी।।

शिव समेत ऊँ नमः शिवाया। दोऊ मंत्र हितारथ काया।।
इहि वन्दन शिव शिवा सनेहा। करइ मनोरथ पूरण देहा।।
पंचावरण घिरित छबि शंकर। प्रनवहुं बार बार मिलि कुल घर।।
पाप विदारि देहु शिव लोका। होइ पलायन भव दुःख शोका।।
सम हत्या अघ होत अनेकन। वन्दउं करउ छार प्रत्येकन।।
भय संसारी अनरथ सपना। ब्यापइ नाहि कृपा करु इतना।।
पूजा मंत्र विहीन विसर्जन। जानहुं नाइ गहिय पद चरनन।।
मांगउ क्षमा जोरि दोउ हाथे। भगती एतिक नाथ मम साथे।।
तारन करहु उबारन मोरा। जैसन होत लोग शिशु कोरा।।
ऊंच नीच सब होइ पुनीता। भाखत वेद शास्त्र सब गीता।।
मूढ़ गंवार अधम खल निश्चर। तिन तारेउ दीनेउ ऊपर वर।।
रीझत मोसम काहेउ नाही। का मोसम खल नहि जग मांही।।
बिनु तुम पूजे पूजे आना। नाही पाउ कोउ कल्याना।।
देखा सुना मान्यता लोके। वशीभूत तुम भगत जनों के।।
भयउ क्रूर केस बेरी मोरे। जौ जानत बल बुधि बा थोरे।।
लोक युवापन शुचि सुरताई। कुमति कुचार रूप असुराई।।
जीव भजन नहि नमः शिवाया। साक्षात सो भव ब्रह्म काया।।

शुक्र ग्रह सम देह शुक्र, तपत शुक्र शुक्रेश।
जासु वदन दोउ शुक्र रह, सो लह कृपा महेश।।104।।
तपसी शुक जाके वदन, सफल होइ ता काज।
शक्ति सिद्धि प्रद शूक सम, आदर करै समाज।।105।।
सृष्टि बीज शिव शुक्रमय, प्राण रूप जग गात।
लिंग रूप जग पूजहीं, मांनि तिन्हे पितु मात।।106।।
सुनै गुनै शुक्रेश कथ, ध्यावइ बारं बार।
तिते करहिं यमदूत भय, जीवन पाउ उबार।।107।।
शुक्र वतारण मर्म जे, बूझि गहइ सदचार।
ता घर सन्तति देव बनु, पावइ गिरिजा प्यार।।108।।
मति अनीति अनचार पथ, किहे शुक्र उपयोग।
असुराई बाढ़ै असुर, कलह कपट भवरोग।।109।।
जयति शिवा शिव सर्वमय, कृपासिन्धु सुखसार।
चरन शरन वन्दन करउं, प्रद सुरता परिवार।।110।।

इति श्रीमद्शिव शक्ति कथायां
सकल कलिकलुषविध्वंसने षष्ठोऽध्यायः
;रुद्र खण्डः समाप्तःद्ध